25 बोल
with a *Twist*

8 से 80 साल के बच्चों के लिए

पुस्तक परिचय

बचपन व बच्चे कहानियों के दीवाने होते हैं, चाहे वे किसी भी सदी के हों। उम्र के साथ सिर्फ कहानियों का स्वरूप एवं विषय बदल जाता है। पहले नानी-दादी की कहानियाँ होती थी, अब Story Telling Sessions होते हैं।

बच्चों के इसी शौक को ध्यान में रखते हुए यह पुस्तक बनी है, जिससे उनके मन-मस्तिष्क में कहानियों के ज़रिए धर्म के संस्कार अंकुरित हो सकें तथा वे अपने धर्म के स्वरूप को जान व पहचान सकें।

श्री महावीराय नमः

जय मयाराम श्री सुदर्शन गुरवे नमः जय मदन

श्री प्रकाश-पद्म-शांति-विनय-जय-नरेश गुरुभ्यो नमः

25 बोल

with a *Twist*

8 से 80 साल के बच्चों के लिए

जय जिनशासन प्रकाशन

प्रथम संस्करण : जून 2020
सर्वाधिकार © प्रकाशक

प्रतियाँ :10,000

Title : PACHCHEES BOL WITH A TWIST

प्रकाशक :
जय जिनशासन प्रकाशन
212, वीर अपार्टमैन्ट, सैक्टर 13,
रोहिणी, दिल्ली-110 085
Mob: +91-98102 87446
Email : jaijinshaasanprakaashan@gmail.com

प्राप्ति स्थान :
रविन्द्र जैन (दिल्ली)
Mob: +91-98102 87446
दीपक जैन (हिसार)
Mob: +91-98962 68770
श्वेता जैन (दिल्ली)
Mob: +91-85888 20621
राजीव नाहर (सुरत)
Mob: +91-93751 65765

मुद्रक :
सिस्टम्स् विज़न, नई दिल्ली
Mob: +91-98102 12565
Email: systemsvision96@gmail.com

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की, फोटोकॉपी अथवा रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनः प्रयोग की किसी भी प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

प्रस्तावना

उत्तराध्ययन सूत्र (28.16) में दस रुचियों में विस्तार और संक्षेप- इन दो रुचियों का वर्णन है। जो व्यक्ति विषय को विस्तृत रूप से समझाए जाने पर ही पकड़ पाते हैं, वे विस्तार-रुचि वाले कहलाते हैं तथा जो संक्षिप्त रूप में ही जानने के इच्छुक होते हैं, वे संक्षेप-रुचि संपन्न होते हैं।

इसके अलावा अधिकांश मानवों में दोनों रुचियों का मिश्रण भी होता है। जब उन्हें विषयों को विस्तार से जानने की लगन होती है, तो वे परत-दर-परत पढ़ते जाते हैं, सुनते जाते हैं, पूछते जाते हैं और जब वे उसकी तह तक पहुँच जाते हैं, तो पुनः उसके संक्षिप्त सूत्र बनाने का प्रयास करते हैं, ताकि उन संक्षिप्त सूत्रों के माध्यम से समग्र विषय का बोध होता रहे।

आगमिक काल में 'स्थानांग' और 'समवायांग' उसी संक्षिप्त शैली में निर्मित हुए। बाद में 'तत्त्वार्थ सूत्र' जैसा संक्षिप्त एवं सारगर्भित संस्कृत ग्रन्थ बना, जो अपनी सर्वग्राह्यता और सम्प्रदाय-निरपेक्षता के बलबूते पर दिगम्बर-श्वेताम्बर के वर्गों में तो मान्य हुआ ही, जैनेतर दार्शनिकों में भी संमान्य, स्वीकार्य और अध्येतव्य बना।

वीर लोकाशाह की धर्म-क्रान्ति के बाद स्थानकवासी मुनियों में संक्षेप रुचि वाली एक नई ज्ञान-शैली प्रचलित हुई। वह थी थोकड़ा-शैली। भगवती-प्रज्ञापना जैसे विशाल आगमों के मूल पाठों को कण्ठस्थ करने की बजाय उनका सारांश थोकड़ों में ढाल दिया गया, जिनमें मूल का विषय छूटा भी नहीं और बृहत् पाठों से बचाव भी हो गया।

थोकड़ा-निर्माण की उस प्रक्रिया में बोलों का माध्यम लिया गया। जैसे 98 बोल

का बासठिया, समकित के 67 बोल आदि। आजकल जिन्हें हम Points, बिन्दु या सूत्र कह देते हैं (जैसे 20 सूत्रीय प्रोग्राम, आत्म-विकास के 10 बिन्दु), उन्हें पुरानी भाषा में 'बोल' कहा जाता था।

इस दौरान एक आवश्यकता बनी कि कुछ ज़रूरी बिन्दुओं का संग्रह किया जाए, जिनमें जैन तत्त्वज्ञान के महत्त्वपूर्ण पहलू सिमट जाँए। किसी अज्ञातनाम लेखक ने ऐसे 25 विषयों का संकलन किया, जो शास्त्राभ्यासी को प्रारंभ में सिखला दिये जाएँ तो आगे विषयावगाहन सरल हो जाए।

ये 25 विषय मुख्यतः भगवती-प्रज्ञापना आदि से चुने गए। एकाध युगीन धारणा से भी गृहीत हुए, जैसे 10 प्राणों की मान्यता। 25 बोल के थोकड़े का प्रचलन स्थानकवासी और तेरापंथ– दोनों सम्प्रदायों में रहा है। जैन पाठशालाओं-शिविरों में इसको प्राथमिकता दी जाती है। इसलिए इसकी व्याख्या के अनेकों संस्करण प्रकट हुए। विज्ञ-जन के लिए, जिज्ञासु प्रबुद्ध-वर्ग के लिए, तत्त्वावगाही के लिए– सब अलग-2।

बच्चों के लिए भी 25 बोल की पुस्तकें आई, सचित्र भी आई। परन्तु प्रस्तुत पुस्तक उनसे कुछ भिन्न प्रारूप लेकर आ रही है। जैसे नंदी सूत्र में चार बुद्धियों की कहानियाँ हैं, पंचतंत्र में पशु-पक्षियों की कहानियाँ हैं, ईसप की Parables की नैतिक कहानियाँ हैं, ऐसे इस पुस्तक में नन्हें-मुन्ने कार्टूनप्रिय बालकों के लिए कहानियों और कार्टूनों का समावेश किया गया है।

इसकी रचना संघ-नायक शास्त्री श्री पद्मचन्द्र जी म. के शिष्य आत्मीय श्री दिनेश मुनि जी म. ने की है। इनकी Innovative सूझबूझ ने हमें हैरान कर दिया है। इस कार्य की मूल प्रेरणा बहन श्वेता जैन (वीर नगर, दिल्ली) रही हैं, तथा उनके प्रेरणा-स्रोत श्री संघनायक जी म. रहे हैं। उन्होंने 2016 के प्रारंभ में 25 बोल से संबंधित प्रवचन श्वेता जी को संशोधित करने को दिए। उन्हें पढ़कर ही 25 बोल को बालोपयोगी बनाने की भावना बनी, जो अब साकार हो रही है।

कार्टून-निर्माण आदि कार्यों में बहन निकिता जैन (लुधियाना) एवं अंकित जैन C.A. (गुरुग्राम) के अहम योगदान के साथ संत परिवार से जुड़ी, मुम्बई निवासी तीनों बहनों– शालिनी, आशु व साक्षी भंसाली– एवं सेवक गौरव जी ने विशेष सहायता दी।

पू. गणाधीश श्री प्रकाश चन्द्र जी म. की अहैतुकी कृपा तो श्री दिनेश मुनि जी पर प्रारंभ से ही रही है– रहेगी, वर्तमान में इस पुस्तक की पाण्डुलिपि को संघ-संचालक श्री नरेश मुनि जी म. एवं प्रत्येक प्रबुद्ध मुनिराज का साधुवाद मिला है।

आशा है, अब पाठक-जिनको ध्यान में रखकर यह कृति बनी है, वह भी इसे स्वीकारेगा। उम्मीद तो बहुत है। लेखक सर्वथा संतुष्ट रहने वाला है। उसने अपना कार्य लगभग निष्काम भाव से किया है, बाकी आपके ऊपर छोड़ दिया।

अन्त में अपने हृदयस्थ संघ-शास्ता गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. के चरणों में जीवन अर्पण है, तो ये रचना भी वहीं।

जय मुनि

विषय–सूची

क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
卐	प्रस्तावना	iii
卐	25 बोल– एक झलक	viii
1.	ये सब क्या हो रहा है?	1
2.	केवल इंसान ही नहीं बोलते	6
3.	हमें इंसाफ़ चाहिए	10
4.	Doraemon की Pocket में क्या है?	14
5.	My Dream Home	18
6.	मेरे बेटे को बचा लीजिए	22
7.	गड्डी जांदी है छलांगां मार दी	26
8.	ये कैसी हलचल है?	30
9.	Eyes vs Blindness	34
10.	समोसा	38
11.	Adventurous Journey	42
12.	गोलगप्पे मेरे Favourite हैं!	48

क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
13.	उल्टा-पुल्टा	52
14.	धमाका सिंह के धमाके	56
15.	क्या आपने बुखार को देखा है?	60
16.	इक नई दुनिया	64
17.	परियों की बातें	68
18.	VISA from Vision	72
19.	Last Over	76
20.	माँ की दुआ	80
21.	Army	86
22.	Personal Experience	90
23.	Eighth Wonder	96
24.	कौन बनेगा छोटा Millionaire	100
25.	गंगा मैय्या	106
卐	प्रार्थना	110

25 बोल–
एक झलक

पहला बोल - गति चार

दूसरा बोल - जाति पाँच

तीसरा बोल - काय छः

चौथा बोल - इन्द्रिय पाँच

पाँचवां बोल - पर्याप्ति छः

छठा बोल - प्राण दस

सातवां बोल - शरीर पाँच

आठवां बोल – योग पंद्रह

नौवां बोल – उपयोग बारह

दसवां बोल – कर्म आठ

11वां बोल – गुणस्थान चौदह

12वां बोल – 5 इंद्रियों के 23 विषय और 240 विकार

13वां बोल – मिथ्यात्व के 10 भेद

14वां बोल – नौ तत्त्वों के 115 भेद

15वां बोल – आत्मा आठ

16वां बोल – दण्डक 24

17वां बोल – लेश्या छ:

18वां बोल – दृष्टि तीन

19वां बोल – ध्यान चार

20वां बोल – छ: द्रव्यों के 30 भेद

21वां बोल – राशि दो

22वां बोल – श्रावक के 12 व्रत

23वां बोल – साधुजी के 5 महाव्रत

24वां बोल – प्रत्याख्यान के 49 भंग

25वां बोल – चारित्र पाँच

नमो अरिहंताणं

नमो सिद्धाणं

नमो आयरियाणं

नमो उवज्झायाणं

नमो लोए सव्व साहूणं।

एसो पंच नमोक्कारो सव्व पावप्पणासणो,

मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥

1. ये सब क्या हो रहा है?

गट्टू Key Chains का दीवाना था। Diwali पर मिले रुपये लेकर वह Archies Gallery में गया। वहाँ से उसने Super Hero वाली Key Chains खरीदी। उसने सोचा कि ये Key Chains दिखाकर वह अपने दोस्तों को चिड़ाएगा।

इसी बात पर इतराते हुए, अपनी अंगुली पर Key Chains को घुमाते हुए गट्टू मस्ती में चल रहा था कि अचानक वह एक Bike से टकरा गया। उसका सिर ज़ोर से ज़मीन पर टकराया और वह बेहोश हो गया।

उसे Hospital में Admit किया गया। Dr. ने कहा– 'इसके सिर में गहरी चोट लगी है, जो धीरे-धीरे ठीक होगी। सर्दी में इसका खास ध्यान रखना होगा।'

सर्दी का मौसम शुरू हो गया। गट्टू को कड़कती सर्दी से बचाने के लिए कमरे की अंगीठी में कुछ लकड़ियाँ जला दी गई। आग को देखकर एकदम गट्टू चिल्लाया– 'बचाओ-बचाओ, मैं इस आग में और नहीं जलना चाहता, मुझे बचाओ।'

गट्टू के इस अजीब Reaction से परिवार को चिंता हो गई। Dr. से Consult किया गया। दवाई की Dose बढ़ गई और कुछ दिन तक सब Normal चलता रहा।

इस दौरान घरवालों को एक चूहे ने परेशान कर दिया। खाने की कोई भी चीज़ हो, चूहा उसका भोग लगा जाता। आखिर उसे पकड़ने के लिए एक पिंजरा लगाया गया।

गट्टू टकटकी लगाकर पिंजरे को देखता रहा। फिर अचानक उसने पिंजरे को उठाकर बाहर फेंक दिया और बोला– 'तुम सब मेरे मासूम भाई को कैद नहीं कर सकते।'

गट्टू की माँ बोली– 'ये तुम्हारा भाई कैसे हो सकता है? तुम इंसान हो और ये चूहा!' पर गट्टू कहता रहा– 'नहीं, ये मेरा भाई है। हम दोनों मिठाई की दुकान पर साथ रहते थे।'

गट्टू की ऐसी बातों से परिवार और ज़्यादा परेशान हो गया। अब Dr. के साथ-साथ एक पंडित जी को भी Consult किया गया। पंडित जी बोले– 'बालक पर बुरी आत्मा का साया है। आपको हवन करवाना होगा, इससे देव प्रसन्न हो जाएँगे।'

हवन की तैयारी हो गई। पंडित जी घर आए और हवन शुरू हो गया। पंडित जी बोले– 'बालक को बुलाओ।' गट्टू की माँ उसे बुलाने गई, पर चीखती हुई बाहर आ गई। गट्टू के पापा भाग कर अंदर देखने गए।

अंदर का नज़ारा देखकर वो हैरान हो गए। गट्टू मुकुट और ज़ेवर पहनकर बैठा हुआ था और उसने अपने आस-पास बहुत सारे Bulbs जलाए हुए थे।

पापा ने पूछा– 'गट्टू, ये सब क्या है?'

गट्टू बोला– 'मैं गट्टू नहीं, देव हूँ। मैं आपकी सेवा-भक्ति से प्रसन्न हो गया हूँ, इसलिए मैंने आपके घर को जगमग कर दिया है।' घर में सन्नाटा सा छा गया। पंडित जी वापिस चले गए और हवन Cancel हो गया।

किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि गट्टू को क्या हो गया है! तभी पता

चला कि Colony में एक ज्ञानी संत आए हुए हैं। परिवार गट्टू को लेकर उनके पास गया और अपनी समस्या बताई।

सोच-विचार करके संत बोले– 'यह सब गट्टू के सिर पर लगी गहरी चोट के कारण है। जिस तरह से देखी हुई घटनाएँ, सुनी हुई बातें सपनों (Dreams) के रूप में Flash कर जाती हैं, ऐसे ही चोट के बाद गट्टू को अपने पिछले जन्म Flash Back होने लगे हैं।'

सभी ने हैरानी से पूछा– 'पिछले जन्म?'

संत बोले– 'हाँ! जलती हुई आग को देखकर गट्टू को उसका नरक का जीवन याद आ गया। चूहे को देखकर तिर्यंच (जानवर) का व देव की बात सुनकर देव का जन्म याद आ गया।'

गट्टू के पापा ने पूछा– 'ये अलग-अलग जन्म क्यों होते हैं?'

संत– 'अपने कर्मों के अनुसार जीव को चार तरह के जन्म (पहचान-गति) मिलते हैं:–

1. बहुत ज़्यादा क्रोध व लालच करने से नरक गति मिलती है।
2. झूठ बोलने व चालबाज़ी करने से तिर्यंच गति मिलती है।
3. सरलता से व जीवों पर दया करने से मनुष्य गति मिलती है।
4. अनुशासन में रहने व साधना करने से देव गति मिलती है।'

गट्टू की माँ बोली– 'गुरुजी, आपकी बात सही है, पर अब इस बच्चे का कुछ इलाज बताइए!'

संत– 'इसे हर रोज़ नवकार मंत्र सुनाइए, जिससे इसे शांति मिलेगी, बुरे कर्मों का नाश होगा और पुराने जन्मों का Flash होना रुक जाएगा।'

संत को प्रणाम करते हुए गट्टू के परिवार ने संकल्प किया कि– 'गट्टू के साथ-साथ वे भी नवकार मंत्र का जाप करेंगे और अच्छे कर्म करके अपना जन्म सुधारेंगे।'

□□□

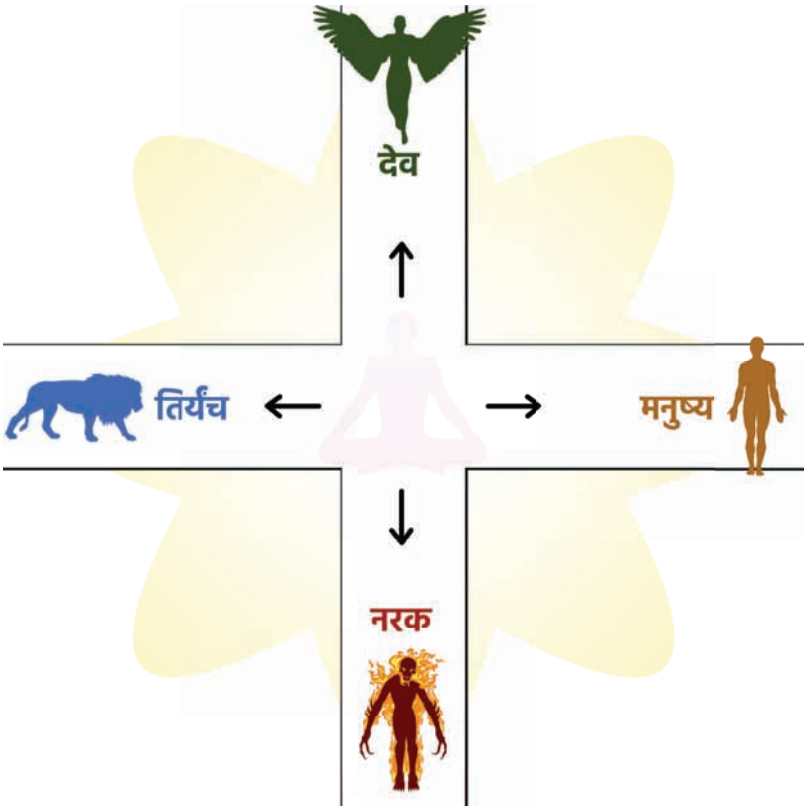

★★★★★ पहला बोल – गति चार ★★★★★

2. केवल इंसान ही नहीं बोलते

Ginni गर्मी की छुट्टियों में Family के साथ Goa घूमने गई। Beach पर Tent लगाकर सब सो चुके थे, पर गिन्नी का मन घूमने के लिए मचल रहा था। वह अपनी Magic Stick लेकर समुद्र के किनारे घूमने निकली।

उसकी नज़र एक पेड़ पर पड़ी, जिस पर एक रंग-बिरंगी चिड़िया चहक रही थी। तभी एक बड़ा सा शंख रेंगता-रेंगता वहाँ आया और पेड़ से सटकर बैठ गया। वहाँ पर पहले से एक चींटी व तितली पेड़ के चारों ओर घूम रही थी।

गिन्नी ने सोचा कि इन सब के दिल की बात जाननी चाहिए। उसने अपनी Magic Stick उन सब पर घुमाई, जिससे वे अपनी Real Life की बातें Share कर सकें। गिन्नी का जादू चल गया और वे सब आपस में बातें करने लगे।

सबसे पहले चिड़िया ने पेड़ से कहा– 'दादा! आप कितने अच्छे हो, जो हमें मीठे-मीठे फल देते हो।' यह सुनकर पेड़ से पानी निकलने लगा।

चिड़िया ने पूछा– 'ये क्या है?'

पेड़– 'ये मेरे आँसू हैं।'

चिड़िया– 'आँसू किसलिए?'

पेड़– 'बिटिया! मैं बहुत अभागा हूँ। औरों को फल दे सकता हूँ, पर खुद फलों की मिठास नहीं चख सकता। मेरे पास सिर्फ Touching Power है और कुछ भी नहीं। तुम लोगों की तरह मैं कहीं घूम भी नहीं सकता।'

तभी मोटा शंख बीच में बोल पड़ा– 'हर जीव का अपना-अपना भाग्य है। मुझे ही ले लो, मैं छूने के साथ-साथ Taste भी कर सकता हूँ। पर मुझसे अच्छी तो चींटी दीदी है, जो सूंघ-सूंघकर कहीं से भी खाना ढूँढ लेती है।'

चींटी– 'मोटे भाई! तुम्हें हमेशा खाने की ही लगी रहती है। इसीलिए Burger की तरह फूलते जा रहे हो। पर खाना ही सब कुछ नहीं होता। काश! तितली की तरह मेरी भी आँखें होती, तो मैं भी सारी दुनिया देख पाती।'

तितली बोली– 'बिना कानों के आँखों का मज़ा भी अधूरा है। मैं गीत-संगीत, किसी के सुख-दुख की बात– कुछ भी नहीं सुन सकती। चिड़िया के पूरे मज़े हैं। इसके पास छूने के लिए त्वचा है, चखने के लिए जीभ है, सूंघने के लिए

नाक है, देखने के लिए आँखें हैं और सुनने के लिए कान हैं।'

सभी एक साथ बोले– 'हाँ, सही ज़िंदगी चिड़िया की है।'

चिड़िया घबरा कर बोली– 'आप सबको ये पाँचों Senses (इंद्रियाँ) नहीं मिली तो इसमें मेरी क्या गल्ती है?'

पेड़– 'गल्ती तुम्हारी नहीं, हमारी ही है। हमें भी कभी पिछले जन्मों में पाँचों इंद्रियाँ मिली होंगी, पर उनका Misuse करने के कारण वे हमसे छिन गई।'

गिन्नी सोचने लगी– 'कैसे-कैसे जीव हैं दुनिया में। मेरे पास भी पाँच इंद्रियाँ हैं, अगर इनमें से कोई एक भी न हो तो.....Oh No! I Can't Survive!'

गिन्नी वापिस अपने घर लौटी तो उसने अपने Friends को सारी कहानी सुनाते हुए बताया– 'जीवों की Five Categories (जातियाँ) होती हैं–

1. एकेन्द्रिय– सिर्फ एक Sense (Skin) वाले जीव, जैसे पेड़-पौधे।

2. बेइन्द्रिय– दो इंद्रिय (Skin, Tongue) वाले जीव, जैसे शंख-सीप।

3. तेइन्द्रिय– तीन इंद्रिय (Skin, Tongue, Nose) वाले, जैसे चींटी-मकौड़ा।

4. चतुरिन्द्रिय– चार इंद्रिय (Skin, Tongue, Nose, Eyes) वाले, जैसे मक्खी-मच्छर।

5. पंचेन्द्रिय– पाँच इंद्रिय (Skin, Tongue, Nose, Eyes, Ears) वाले, जैसे इंसान, पशु-पक्षी।'

सभी दोस्तों ने गिन्नी को ये सब समझाने के लिए Thanks दिया व मिलकर एक-दूसरे से Promise किया कि वे कभी भी अपनी Senses का Misuse नहीं करेंगे।

□□□

★★★★★ दूसरा बोल – जाति पाँच ★★★★★

3. हमें इंसाफ चाहिए

धरती की चार महाशक्तियाँ– मिट्टी, पानी, अग्नि और हवा– बड़ी तेज़ी से भाग रही थी। रास्ते में पेड़-पौधों ने उनसे दौड़ने का कारण पूछा। वे बोली– 'हम इंसान के व्यवहार से दुखी हैं, इसलिए इंसाफ माँगने धर्मराज, जो UNO से भी बड़ी ताकत है, उस के पास जा रहे हैं।' पेड़-पौधे बोले– 'ऐसी बात है तो हम भी साथ चलते हैं, हमें भी इंसाफ चाहिए।'

सभी धर्मराज के दरबार में पहुँच गए। धर्मराज ने पूछा– 'तुम सब एक साथ कैसे आए?' मिट्टी बोली– 'प्रभो! धरती पर इंसान ने हमारा जीना मुश्किल कर रखा है।' धर्मराज– 'क्या किया उसने?'

मिट्टी– 'ये पूछो, क्या नहीं किया! मेरा सीना छलनी-छलनी कर दिया। कभी पहाड़ों को काटता है, तो कभी खेतों को जलाता है। वह धन के लालच में मुझे खत्म करता जा रहा है। मुझे कहता तो 'धरती माँ' है, पर काम ऐसे करता है।'

पानी ने कहा– 'मैं सबको स्वच्छ करने वाला था, पर इंसान ने गंदगी डाल-डाल कर मुझे दूषित कर दिया।'

अग्नि बोली– 'मैं भोजन पकाने में Help करती हूँ, पर मनुष्य ने कूड़ा-कचरा, बीड़ी-सिगरेट, पटाखे आदि जलाने में मेरा Misuse किया है।'

हवा ने कहा– 'प्रभो! मैं सबको प्राण-वायु (Oxygen) देती हूँ, पर बदले में मुझे मिली–ज़हरीली गैसें। अगर मेरा दम घुट गया तो क्या इंसान ज़िंदा रह पाएगा?'

पेड़-पौधे बोले– 'Roads, Industries, Infrastructure आदि बनाने के लिए मानव जंगलों को काटता जा रहा है। हम नहीं रहेंगे तो बरसात भी नहीं होगी।'

सबकी बात सुनकर धर्मराज बोले– 'तुम सब क्या चाहते हो?' हवा बोली– 'हम इंसान को मज़ा चखाना चाहते हैं।' धर्मराज ने सोचा– 'इसी से मनुष्य को अक्ल आएगी।' वे बोले– 'ठीक है, पर एक-एक करके मज़ा चखाना, नहीं तो मानव-जाति खत्म हो जाएगी।'

धरती पर लौटकर सबसे पहले मिट्टी ने अपना प्रकोप दिखाया। धरती काँपने लगी। भूकंप से बड़ी-बड़ी इमारतें ढह गई। चारों ओर बचाओ-बचाओ की आवाज़ें गूँज उठी।

भूकंप शांत हुआ तो पानी की सुनामी लहरों ने लाखों लोगों को बेघर कर दिया। त्राहि-त्राहि होने लगी।

कुछ दिनों बाद जगह-जगह आग लगने लगी, ज्वालामुखी फटने लगे। एक जगह आग बुझती तो दूसरी जगह लग जाती। लोगों की जान के लाले पड़ने लगे।

फिर तूफ़ानी हवाओं ने सब अस्त-व्यस्त कर डाला। जनता घर से बाहर निकलने से डरने लगी।

पेड़-पौधों को नष्ट करने का Result ये निकला कि वर्षा-ऋतु आने पर भी बारिश नहीं हुई। सूखा पड़ने से इंसान पानी के लिए तरसने लगा। Oxygen की कमी से साँस लेने में परेशानी हो गई।

धरती पर हाहाकार मच गया। इंसान दौड़ा-दौड़ा धर्मराज के पास पहुँचा– 'प्रभो! आपके रहते ये क्या हो रहा है?' धर्मराज– 'ये तुम्हारी करनी का ही फल है।' मानव– 'वो कैसे?'

धर्मराज– 'इस संसार में जीव छः प्रकार के शरीर (काय) धारण करते हैं–

1. पृथ्वीकाय– मिट्टी का शरीर धारण करने वाले जीव
2. अप्काय– पानी का शरीर धारण करने वाले जीव
3. तेउकाय– अग्नि का शरीर धारण करने वाले जीव
4. वायुकाय– हवा का शरीर धारण करने वाले जीव
5. वनस्पतिकाय– पेड़-पौधों का शरीर धारण करने वाले जीव
6. त्रसकाय– चलने-फिरने वाले शरीर को धारण करने वाले जीव, जैसे– Insects, Animal, Man.'

धर्मराज– 'इन छः कायों में त्रसकाय को और त्रसकाय में मनुष्य को सबसे समझदार माना जाता है, पर दुख की बात है कि तुम अपनी Life के लिए Essential इन पाँचों कायों को नष्ट करने में लगे हुए हो। अभी भी समय है, संभल जाओ। इन पाँचों की सुरक्षा में ही तुम्हारी सुरक्षा है।'

इंसान ने धर्मराज के चरणों पर हाथ रखकर कसम खाई– 'आगे से मैं इनकी सुरक्षा का ध्यान रखूँगा।'

धर्मराज– 'तो जाओ, सुख से रहो।'

□□□

✶✶✶✶✶ तीसरा बोल – काय छः ✶✶✶✶✶

4. Doraemon की Pocket में क्या है?

Nobita का बचपन में Accident हो गया। वह बहुत दिनों तक बेहोशी की हालत में रहा। उसकी ऐसी हालत देखकर Doraemon को उस पर दया आ गई। उसने अपनी Pocket से एक जड़ी-बूटी निकालकर, उसका रस Nobita पर छिड़का।

उससे Nobita होश में आ गया। वह रोते-रोते बोला– 'मैं जीकर क्या करूँगा? मेरा सारा शरीर खराब हो चुका है।' Doraemon– 'तुम चिंता मत करो, मैं तुम्हारी मदद करूँगा।' उसने Pocket से एक Gadget निकाला और Nobita को देते हुए कहा– 'इससे तुम्हारी Feeling Power वापिस आ जाएगी।' ऐसा ही हुआ।

Nobita Doraemon को छू कर बोला– 'ओह! तुम्हारे पाँव कितने गरम हैं। पेट बहुत Soft है और माथा तो बिल्कुल ठंडा है।'

Doraemon बोला– 'ये है बहुत पुराना फंडा, पैर गरम पेट नरम सिर ठंडा, बीमारी आए तो दिखाओ डंडा, हा-हा-हा.....।' हँसते-हँसते Doraemon ने उसे एक और Gadget दिया, जिसमें Taste करने की Power थी। साथ में खाने को Chocolate भी दी।

Nobita– 'कितनी Yummy है ये, मज़ा आ गया।' तभी Doraemon को शरारत सूझी। उसने उसे पीने के लिए खारा Soda दे दिया।

एक घूँट पीते ही Nobita थू-थू करने लगा– 'छी! कितना कड़वा है ये।' Doraemon ने ज़ोर से ठहाका लगाया।

Doraemon Nobita को घुमाने Garden में ले गया। वहाँ सूंघने की Power वाला Gadget देते हुए बोला– 'लो, इसे संभालो।' फूलों की खुशबू से Nobita झूमने लगा। इसी मस्ती में उसने एक फूल तोड़ लिया।

इस से Doraemon नाराज़ हो गया। उसने उस Gadget को गायब कर दिया और कहा– 'क्या ये Power इसलिए दी थी कि किसी फूल का जीवन नष्ट कर दो?' Nobita को अपनी गल्ती का अहसास हुआ। उसने Sorry कहा तो Doraemon ने वो Gadget वापिस कर दिया।

वे दोनों कश्मीर घूमने गए। वहाँ Doraemon ने Nobita को देखने की Power वाला Gadget दिया। वहाँ का सुंदर नज़ारा देखकर Nobita खुशी से चिल्लाया– देखो Doraemon! नीला-नीला आकाश, हरे-भरे बाग, वो झरने, वो झील।'

Nobita ने सोचा कि वह जो भी माँगता है, Doraemon Pocket से निकालकर दे देता है। उसके मन में वह Pocket देखने का लालच आ गया। उसने Pocket में झाँकने की कोशिश की, तो Doraemon ने Gadget की Power खत्म कर दी। Nobita को दिखना बंद हो गया।

वह बोला– 'आखिरी बार मुझे माफ कर दो, Please. Doraemon– 'कब तक माफ करूँ तुम्हें?' Nobita ने रो-रो कर आँसुओं से तालाब भर दिया, तब जाकर Doraemon से उसे Power वापिस मिली।

Nobita ने Doraemon को खुश करके एक सुनने की Power वाला Gadget भी हासिल कर लिया। पक्षियों की चहक सुनकर वह भी गुनगुनाने लगा। उसे लगा कि उसकी Life में अब कोई कमी नहीं रही। आँखों में खुशी के आँसू भरकर वह बोला– 'Thank You, Doraemon!'

Doraemon– 'ये पाँचों Gadgets जीव को 5 Senses (इंद्रियाँ) के रूप में मिलते हैं। इनकी Help से जीव ज्ञान प्राप्त करता है। इनके नाम हैं:–

1. स्पर्श इन्द्रिय (Skin) 2. रसना इन्द्रिय (Tongue) 3. घ्राण इन्द्रिय (Nose) 4. चक्षु इन्द्रिय (Eyes) 5. श्रोत्र इन्द्रिय (Ears)'

Doraemon– 'Nobita, ये पाँचों Senses बहुत Precious हैं। इन का Proper Use करना तुम्हारे लिए बहुत बड़ा Challenge है। तुम पहले दो बार गल्ती कर

चुके हो। ध्यान रखना, बार-बार की गल्ती से ये Gadgets Fuse हो जाएँगे।'

Nobita– 'मैं Promise करता हूँ– आगे से गल्ती नहीं करूँगा।'

Doraemon– 'Best of Luck And Take Care.'

□□□

★★★★★ चौथा बोल – इन्द्रिय पाँच ★★★★★

5. MY DREAM HOME

Candy बहुत Innovative लड़की थी। वह घर को सजाने के नए-नए तरीके ढूँढती रहती थी। एक दिन उसने एक सपना देखा– 'एक सेठ के घर में बेटे का जन्म हुआ। सेठ ने सोचा कि बच्चे के लिए एक Baby Home बनवाना चाहिए। उसने Engineers को बुलाकर एक Different, प्यारा सा घर बनाने को कहा।'

Candy ने देखा कि पलक झपकते ही घर बनाने का सामान इकट्ठा हो गया। Workers ने झटपट Pillars, दीवारें व छत तैयार कर दी। Pillars के नीचे छोटे-छोटे पहिये लगाए, जिससे वह घर Portable बन गया।

एक Special Team ने आकर घर में C.C.T.V. कैमरे लगाए, जिससे बाहर की सभी Activities को जाना जा सके। तभी सेठ जी ने देखा कि घर की दीवारों में छोटे-छोटे Hole किए जा रहे हैं।

उसने Engineer से पूछा– 'ये Hole किसलिए?'

Engineer ने कहा– 'Sir! इन Holes से शुद्ध वायु घर के अंदर जाएगी और अंदर की अशुद्ध वायु बाहर आएगी। इस Process के लिए हमने घर के अंदर एक System भी लगा दिया है।' देखते-देखते खिलौने जैसा घर तैयार हो गया।

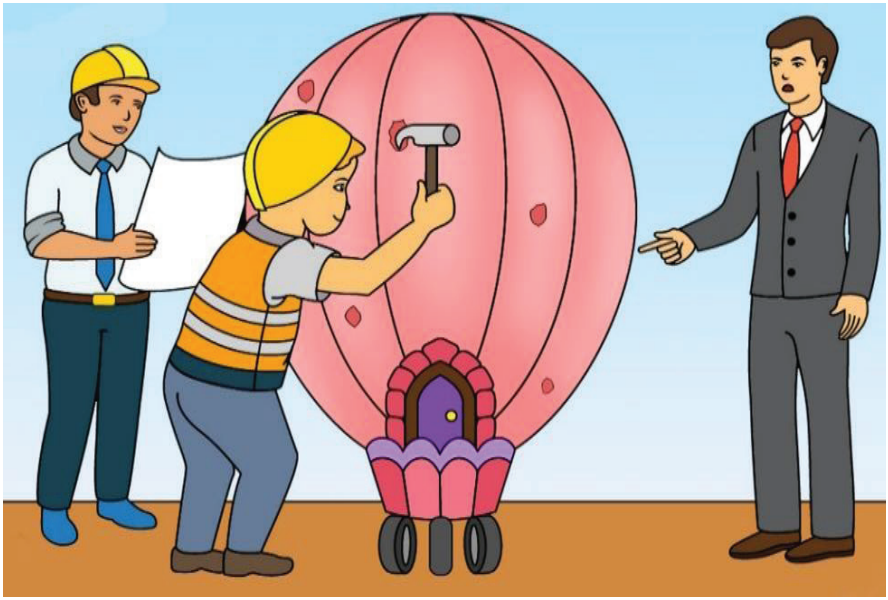

सेठ जी बोले– 'ये बहुत छोटा है। जैसे ही बच्चा बड़ा होगा, ये बेकार हो जाएगा।'

Engineer– 'सेठ जी! ये बहुत Different घर है। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होगा, घर Balloon की तरह फूलता चला जाएगा। ये आज की Latest Technology है। Technologies तो हमारे पास और भी हैं, पर वे बहुत महंगी हैं।'

सेठ– 'तुम पैसे की चिंता मत करो। जो कर सकते हो, करो।'

कारीगरों ने वहाँ एक Sound-System Fit कर दिया। उन्होंने बताया कि यह System बाहर की Sound-Waves को Catch करेगा व उन्हें मनचाही आवाज़ के रूप में बाहर छोड़ सकेगा। सेठ जी 'बल्ले-बल्ले' करने लगे।

इसके बाद एक अनोखा Sensor System पूरे घर में लगाया गया, जो

Environment में फैली हर तरह की (अच्छी व बुरी) Vibrations की Processing करके उन्हें Positive Vibrations में Convert कर सकेगा। सेठ जी के मुँह से निकला 'Wonderful!'

सपने में यह सब देखकर Candy ज़ोर से चिल्लाई– 'Yes! This Is My Dream Home.' उसकी तेज़ आवाज़ सुनकर सब घरवाले जाग गए। Candy ने अपने सपने के बारे में सब को बताया।

वह बोली– 'मम्मा! मुझे वैसा ही घर चाहिए।'

मम्मा– 'वो घर तो Already तुम्हारे पास है।'

Candy– 'वो कैसे?'

मम्मा– 'देखो, जब जीव का जन्म होता है, तो सबसे पहले शरीर बनाने के लिए वह आहार-सामग्री ग्रहण करता है, इसे आहार पर्याप्ति कहते हैं। उस आहार रूपी Material से Body का Structure तैयार होता है, जिसे शरीर पर्याप्ति कहते हैं।'

Candy– 'फिर क्या होता है?'

मम्मा– 'फिर इंद्रिय पर्याप्ति यानि C.C.T.V. जैसी इंद्रियों (Senses) का निर्माण होता है। इसके बाद शुद्ध वायु (Oxygen) लेने के लिए Respiratory System की रचना होती है, इसे श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति कहते हैं।'

मम्मा– 'फिर Vocal Cords (स्वर तंत्र) के रूप में Sound System बनता है। इससे जीव में बोलने की ताकत आ जाती है, यह भाषा पर्याप्ति कहलाती है। सबसे Last में सोचने की ताकत वाला Brain व Neuro-System तैयार होता है, इसे मनः पर्याप्ति कहते हैं। यह तुम्हारे Dream Home के Sensor System जैसा है, जिससे जीव Positive सोच सकता है।'

मम्मा– 'अब बताओ, तुम्हारे पास, Infact हम सबके पास वो घर है ना!'

Candy– 'Yes Mamma! We all are so Lucky. पर एक बात बताना तो मैं भूल ही गई। Engineer ने सेठ जी से कहा था कि इन Devices की बहुत Care रखनी होगी, नहीं तो ये Damage हो जाएँगे।'

मम्मा– 'Yes, हमें सही खान-पान, Yoga व Meditation के through इनकी Care करनी होगी, so that they work properly.'

Candy– 'I will try my best, Mamma.'

□□□

✶✶✶✶✶ पाँचवां बोल – पर्याप्ति छः ✶✶✶✶✶

6. मेरे बेटे को बचा लीजिए

स्वामी गजानन्द पहुँचे हुए योगी थे। एक बार उन्होंने U.S.A. में जाकर योग-शिविर लगाया। योग सीखने वालों की संख्या प्रतिदिन बढ़ने लगी। एक दिन एक परिवार अपने 16 साल के बेटे Sandy को लेकर स्वामी जी के पास आया।

Sandy को पूरा होश भी नहीं था। उसके पापा ने बताया– 'ये हमारा इकलौता बेटा है। छोटी उम्र से ही इसने Smoking और Drinking करना शुरू कर दिया। हमने सोचा कि हम भी ऐसा करते हैं, तो इसे भी अपना शौक पूरा करने दें। पर धीरे-धीरे इसकी Condition बिगड़ती चली गई।'

स्वामी जी– 'फिर क्या हुआ?' पापा– 'यह चोरी-छिपे Drugs लेने लगा, जिससे इसकी भूख खत्म हो गई। कुछ भी खाने को देते तो कहता– 'मुझे भूख नहीं है।' अब इसे साँस लेने में भी Problem है।'

स्वामी जी– 'ये करता क्या है?'

पापा– 'कुछ नहीं। सारा दिन अपने Room में बेहोश-सा पड़ा रहता है। जब कुछ होश आता है तो नशा करके फिर वैसा हो जाता है। इसे सर्दी-गर्मी का भी अहसास नहीं रहता। ढंग से आवाज़ भी नहीं निकलती। कभी-कभी दो-चार डरावने शब्द बोलता है– 'मैं हार चुका हूँ, मुझे मर जाने दो।'

Sandy की मम्मी ने रोते हुए कहा– 'स्वामी जी! हमें डर लगता है कि कहीं ये Suicide न कर ले।' स्वामी जी ने देखा कि Sandy का शरीर सूख चुका है। उसकी Pulse feel करते हुए स्वामी जी बोले– 'इसे संभालना बहुत मुश्किल है,

क्योंकि इसके Liver, Kidney आदि Organs बहुत ज़्यादा Damage हो चुके हैं।'

Sandy की मम्मी– 'इसे संभालना Difficult है, Impossible तो नहीं!'

स्वामी जी– 'इसके Treatment के लिए कम से कम एक साल लगेगा और आपको भी New Born Baby की तरह इसकी Care करनी होगी।'

मम्मी– 'हम सब कुछ करने को तैयार हैं, आप Plzzz... मेरे बेटे को बचा लीजिए।'

स्वामी जी– 'सुनिए। हमारे ग्रन्थों में 10 तरह के प्राण (Power) बताए गए हैं–

1. आयुष्य बलप्राण– Life Retaining Power. 10 प्राणों में यह सबसे मुख्य है। Sandy इसी प्राण के सहारे जी रहा है।
2. श्वासोच्छ्वास बलप्राण– शरीर की Breathing Power.
3. काय बलप्राण– शरीर की Working Power.
4. वचन बलप्राण– जीव की Speaking Power.
5. मन बलप्राण– जीव की Thinking Power.

6-10. इंद्रिय बलप्राण– पाँचों Senses की जो Working Power है, वह पाँच प्रकार का इंद्रिय बलप्राण है।'

स्वामी जी– 'आयुष्य को छोड़कर Sandy के बाकी प्राण Disturb हो चुके हैं। अगर उन्हें संभाला नहीं गया तो आयुष्य भी ज़्यादा देर टिक नहीं पाएगा। इसे ठीक करने का एक ही उपाय है– Operation 'कायाकल्प'।'

Sandy के पापा ने पूछा– 'इसमें क्या करना होगा?'

स्वामी जी– 'नए सिरे से इसके शरीर में ताकत डाली जाएगी। सबसे पहले इसके आसपास से नशे की सब चीज़ें दूर कर दो। इस Process में यह नशे के लिए तड़पेगा, सिर भी पटकेगा। आपको बस इसे चोट लगने से बचाना है।'

Sandy के पापा– 'हम तैयार हैं।'

Operation शुरू हो गया। स्वामी जी ने जो कहा था, वही हुआ। कुछ समय बाद, नया नशा नहीं मिलने से वह होश में आने लगा, कुछ-कुछ भूख भी लगी। उसे थोड़ा-थोड़ा खाने के लिए दिया जाने लगा। साथ में चूर्ण भी दिया, जिससे वो Digest हो सके। इससे शरीर में Energy आनी शुरू हो गई।

फिर स्वामी जी ने खुले वातावरण में Sandy को प्राणायाम शुरू करवाया। अनुलोम-विलोम आदि करने से साँस की परेशानी दूर हो गई। धीरे-धीरे Sandy को Healthy Diet पर लाया गया, इससे उसकी Senses की Power Recover हो गई।

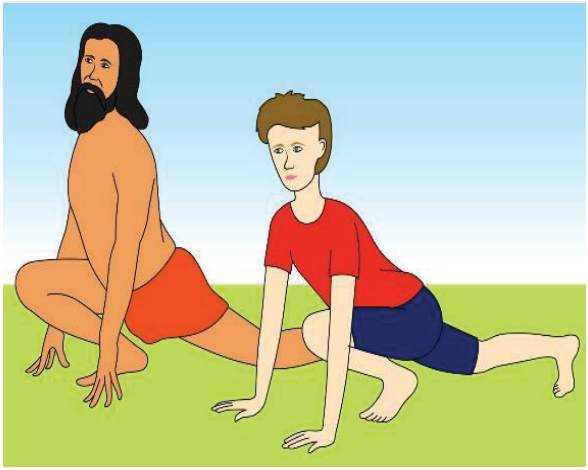

Speech Therapy लेने से वह अच्छे से बोलने लगा।

एक Psychiatrist ने उसे Depression से बाहर निकालने में बहुत Help की। Sandy बिल्कुल स्वस्थ हो गया।

स्वामी जी ने Sandy से पूछा– 'अब भी मरना चाहते हो?'

Sandy– 'नहीं स्वामी जी। आपने मुझे नई ज़िंदगी दी है। मैं अपने Friends को भी नशे की Unconscious Life से निकालकर Healthy Life में लाने की कोशिश करूँगा।' Sandy व उसके Parents से भावपूर्ण विदाई लेकर स्वामी जी India में वापिस लौट आए।

□□□

★★★★★ छठा बोल – प्राण दस ★★★★★

7. गड्डी जांदी है छलांगां मार दी

Addy को नई-नई गाड़ियों के बारे में जानने का बहुत शौक था। उसके एक दोस्त ने बताया कि तीन कंपनियाँ सारी दुनिया पर राज करना चाहती हैं और वे सब जगह अपनी गाड़ियाँ पहुँचा रही हैं। Addy ने तीनों के नाम नोट कर लिए– Audari (Auda), Vakaari (V) व Aahari (Aaha).

Addy ने Audari की Website खोली। उसने देखा कि चींटी से लेकर हाथी तक, यानि छोटे-बड़े सब जीवों के लिए इस Company के पास वाहन उपलब्ध

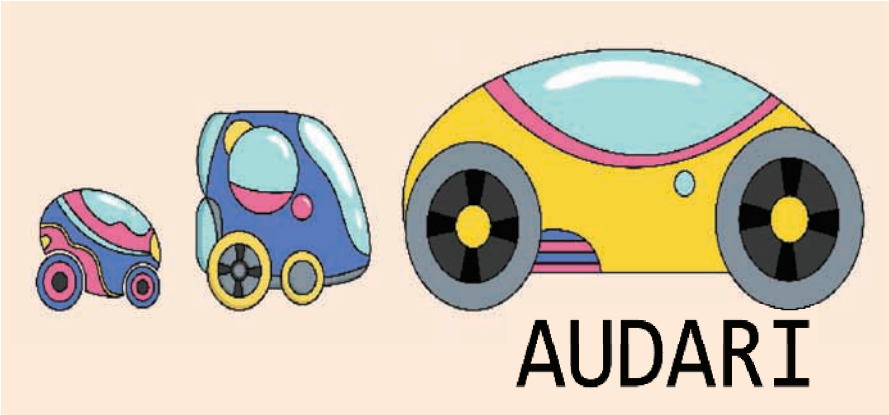

थे। Variety का तो अंत ही नहीं था। Unlimited Shades वाले, Petrol, Diesel, Gas व Electricity से चलने वाले, Single-Wheeler, Multi-Wheeler, महंगे-सस्ते हर तरह के वाहन थे।

Vakaari की Website पर लिखा था– Buy Me, If You Can! इस

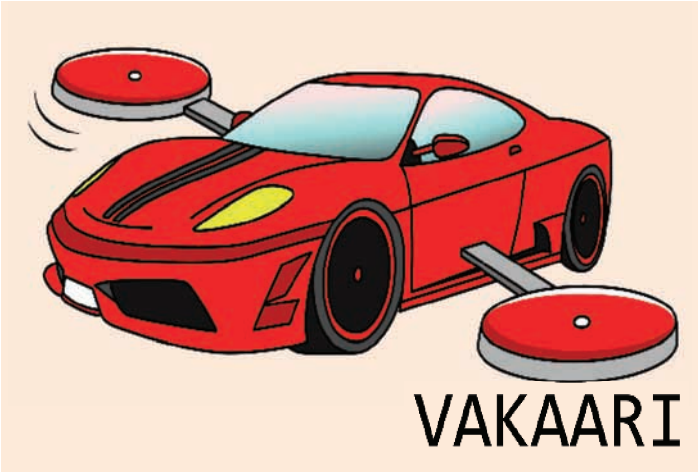

Company की गाड़ियाँ Magic से कम नहीं थी। इनमें न Fuel डालने का झंझट था, न टूट-फूट का डर। Life-Time ये ज्यों की त्यों रहेंगी। Remote का बटन दबाओ और मनचाहा Size, Shape व Color पाओ। इन्हें ज़मीन पर, पानी पर, आकाश में– जहाँ चाहे, वहाँ चलाया जा सकता था।

Addy ने देखा कि इसकी Customer's List में Aliens ही Aliens हैं, क्योंकि वे ही इतनी महंगी गाड़ियाँ Afford कर सकते थे। अच्छे-अच्छे Model बिक चुके थे। जो थोड़े-बहुत बचे थे, उनके लिए कुछ धरतीवासियों ने Apply कर दिया। Company के पास जो Rejected व Defective माल था, वो Hell के जीवों को सस्ते दामों में बेचा जा रहा था।

Aahari Co. की गाड़ियाँ बिल्कुल अलग थी। ये Rocket की तरह उड़कर दूसरे Planets की सैर करवा सकती थी। पर इन्हें Operate करना किसी Challenge से कम नहीं था। Atomic Energy की 14 Super Techniques को जानने वाला ही इन्हें Handle कर सकता था। Company ने ऐसी Unique Personalities को Promote करने के लिए ये गाड़ियाँ बनाई थी।

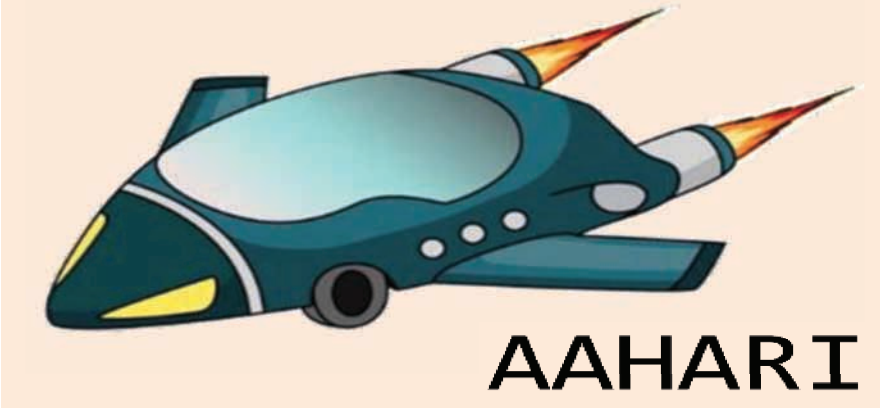

Addy ने अपने पापा को इन गाड़ियों के बारे में बताते हुए कहा– 'पापा! देखा आपने, आज की Technology का कमाल।'

पापा– 'बेटा! Nature (कुदरत) का कमाल इससे भी बढ़कर है। उसने सब जीवों को जीवन की यात्रा करने के लिए गाड़ियाँ दी हैं, जिन्हें हम शरीर कहते हैं।' Addy– 'शरीर?'

पापा– 'हाँ, शरीर! 3 Macro व 2 Micro– कुल 5 शरीर होते हैं।'

Addy– 'मुझे इनके बारे में जानना है, आप मुझे बताइए।'

पापा– 'सबसे पहले औदारिक शरीर (Audarik) है। Auda गाड़ियों की तरह इसकी बहुत Varieties हैं। Plants से लेकर Animals तक एवं सभी मनुष्यों के पास यह शरीर होता है। इसकी रचना Blood, Bones, Flesh आदि से होती है।'

पापा– 'दूसरा वैक्रिय शरीर (Vaikriya) Invisible Powers से बना होता है। इसके Features Vakaari गाड़ियों की तरह Magical हैं। Fine Quality वाला वैक्रिय शरीर देवताओं को मिलता है व Low Quality वाला नरक के जीवों को।'

पापा– 'तीसरा आहारक शरीर (Aaharak) है। इसे केवल वे संत-महात्मा बना

सकते हैं, जिन्हें 14 पूर्व (Super Knowledge) का ज्ञान होता है। वे अपने ज्ञान और Nature की Unique Powers की सहायता से ऐसा शरीर बनाकर भगवान् के पास जा सकते हैं व उनसे बातें कर सकते हैं।'

पापा– 'इन तीनों तरह के शरीरों में दो तरह के Micro शरीर छुपे हुए होते हैं– तैजस शरीर व कार्मण शरीर। तैजस शरीर Engine की तरह पहले तीनों शरीरों में Heat Generate करता है व उनका Temperature Maintain रखता है। कार्मण शरीर Meter की तरह जीव के कर्मों की Recording रखता है। इसकी Report के आधार पर जीव को नया शरीर, यानि नई गाड़ी मिलती है।'

Addy– 'पापा! आपकी Knowledge ने तो मेरी आँखें खोल दी।'

पापा– 'अब तुम्हें सोचना है कि तुम औदारिक शरीर की गाड़ी कैसे चलाओगे!'

Addy– 'मैं Report Card में Excellent लाकर दिखाऊँगा।'

□□□

★★★★★ सातवां बोल – शरीर पाँच ★★★★★

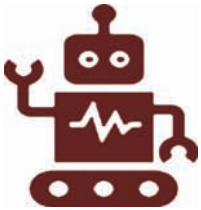

8. ये कैसी हलचल है?

नत्थू लाल के तीन पोते थे– गौतम, साहिल और बंटी। तीनों बहुत आलसी थे। नत्थू ने उनके Class Teacher पोपट लाल से इस बारे में बात की। पोपट लाल बोले– 'हमारी Smart Lab में Robot बनाना सिखाते हैं। इन्हें वहाँ Admission दिला दो। नई चीज़ सीखेंगे तो आलस छूट जाएगा।'

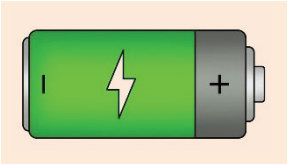

नत्थू ने ऐसा ही किया। Lab में उन्हें Battery की Different Powers के बारे में बताया गया। बैटरी के ढेर सारे Functions देखकर तीनों हलचल में आ गए। वे घंटों-घंटों बैटरी के साथ लगे रहते। उन्होंने Robot बनाने के कई तरीके सीख लिए।

एक दिन पोपट ने तीनों को एक-एक बैटरी देते हुए कहा– 'One Week में अच्छे से अच्छा Robot बनाकर दिखाना है।' तीनों काम में जुट गए। 'सामान इकट्ठा करना, उन्हें जोड़ना, एक-एक Part को बैटरी से Charge करना'– इस Process में पूरा हफ़्ता बीत गया।

One Week के बाद पोपट ने आकर देखा कि अभी तक बैटरी व Robot का मिश्रण (Mixture) ही पूरा नहीं हुआ। इससे पोपट नाराज़ हो गए और बोले– 'तुम्हें तीन दिन का समय और देता हूँ, काम पूरा हो जाना चाहिए।'

3 दिन बाद पोपट ने आकर पूछा– 'काम हो गया?' गौतम का Robot तैयार था, उसने कहा– 'Yes Sir.' साहिल ने डरकर झूठ बोल दिया– 'मेरा Robot भी तैयार है।' पोपट ने उसे Robot दिखाने को कहा तो उसका झूठ पकड़ा

गया। पोपट ने उसे बहुत डाँटा। बंटी ने बहाना बनाते हुए कहा– 'Sir! मुझे Fever हो गया था, मैं कल तक Robot Complete कर लूँगा।'

अगले दिन तीनों के Robots तैयार थे। पोपट एक-एक को Check करने लगे। एक रोबोट, जिस पर 'HUMAN' का Tag लगा था, वह हूबहू इंसान की तरह हरकतें कर सकता था। दूसरा 'MAGICIAN' रंग व Style बदलते-बदलते कभी गायब हो जाता, कभी फिर दिखने लगता। तीसरा 'JET' Space में चक्कर काटकर वापिस आ सकता था।

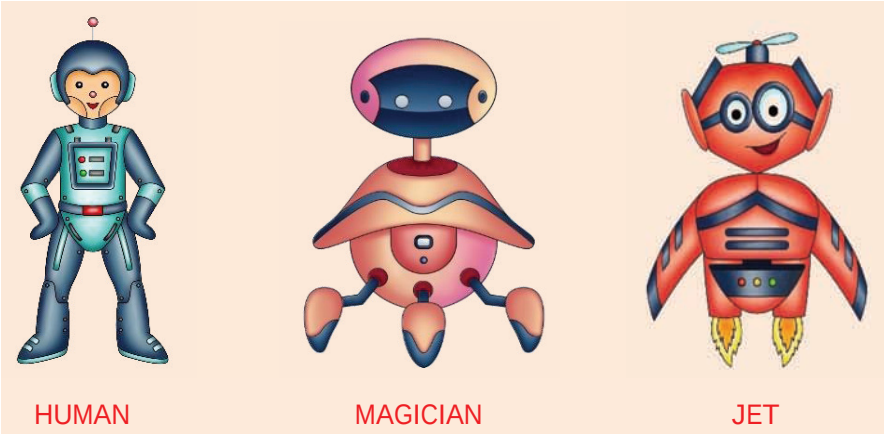

पोपट– 'Wonderful! तुम तीनों को बहुत-बहुत शाबाशी है।'

पोपट ने सोचा कि 'गौतम सबसे ज़्यादा Intelligent है, 'JET' जैसा Robot वही बना सकता है।' इसलिए 'JET' पर गौतम के नाम का Tag लगा दिया। 'MAGICIAN' को साहिल की रचना समझकर उसके नाम का Tag लगाया। बंटी के बारे में सोचा कि– 'इस आलसी से तो 'HUMAN' ही बना होगा और उसमें भी गौतम की Help ली होगी।' इसलिए उसके Tag पर दोनों का नाम लिख दिया।

गौतम ने Tags देखे तो पोपट से कहा– 'Sir! आपने सब उल्टा-पुल्टा कर दिया। सिर्फ साहिल का नाम सही जगह लिखा है। 'JET' को बंटी ने बनाया

है। मैं तो सिर्फ 'HUMAN' ही बना पाया था। बंटी ने पहले 'HUMAN' बनाया, फिर उसे 'JET' का रूप दे दिया।' पोपट ने 'Sorry' बोलते हुए Tags पर Correction की और बंटी को खूब शाबाशी दी।

तीनों ने घर आकर दादू को सारी बातें बताई। दादू ने उन्हें इनाम देते हुए कहा– 'मुझे खुशी है कि तुम हलचल करना सीख गए। पुराने लोग इस हलचल को योग कहते थे।' साहिल– 'और क्या कहते थे पुराने लोग?'

दादू– 'यह हलचल तीन तरह से होती है– मन से, वाणी से और शरीर से। मन के 4 प्रकार हैं। मन से कुछ भी सोचना व्यवहार मन है, जैसे ये सोचना– आज मैं Birthday Party में जाऊँगा...। सही दिशा में सोचना सत्य मन है।'

साहिल– 'जैसे पोपट Sir ने 'MAGICIAN' के बारे में सही Guess किया।'

दादू– 'हाँ। इससे उल्टा यानि गलत Guess करना असत्य मन है। जैसे 'JET' के बारे में पोपट ने गलत Guess किया। चौथा मिश्र मन है, यानि कुछ सही, कुछ गलत– ऐसे Mix सोचना।'

गौतम– 'HUMAN' के बारे में पोपट Sir ने ऐसे ही खिचड़ी बना दी थी।'

दादू– 'वाणी के भी ऐसे ही 4 भेद हैं। सामान्य बातचीत करना, Order देना व्यवहार वचन है। सच बोलना सत्य वचन व झूठ बोलना असत्य वचन है। सच-झूठ मिलाकर बोलना मिश्र वचन है।'

बंटी– 'जैसे मैंने बुखार का बहाना बनाते हुए कहा था।'

दादू– 'काया की हलचल 7 तरह की है। नया शरीर बनाने के लिए जीव के पास Battery जैसा कार्मण शरीर होता है। उसकी हलचल कार्मण काय योग है। इस कार्मण शरीर की Help से 'HUMAN' व 'MAGICIAN' जैसे दो शरीरों (औदारिक और वैक्रिय) की रचना होती है। जब तक कार्मण व इन शरीरों का मिश्रण चलता है, तब तक वह हलचल औदारिक मिश्र और वैक्रिय मिश्र कहलाती है। मिश्रण पूरा होने पर औदारिक काय योग (HUMAN Robot

जैसा) व वैक्रिय काय योग (MAGICIAN जैसा) कहलाता है।'

बंटी– 'मेरा JET कब बनेगा?' दादू– 'औदारिक शरीर की Help से 'JET' जैसा आहारक शरीर बनाया जाता है। जब तक दोनों का मिश्रण हो, तब तक आहारक मिश्र, शरीर पूरा बन जाने पर आहारक काय योग होता है। इस तरह कुल 4+4+7=15 योग होते हैं।'

गौतम– 'दादू! आपको भी एक Smart Lab खोलनी चाहिए।'

बंटी– 'Smart Lab खोली तो दादी से झगड़ा कौन करेगा?'

दादू– 'बदमाश! अभी मज़ा चखाता हूँ।' जैसे ही दादू उसे पकड़ने लगे, वो 'JET' की तरह एकदम वहाँ से रफूचक्कर हो गया।

□□□

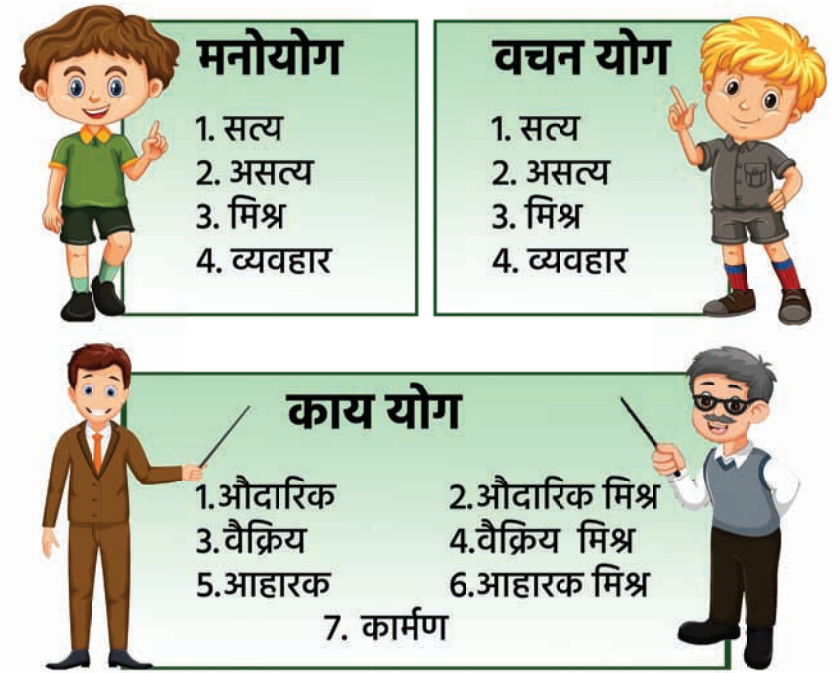

★★★★★ आठवां बोल – योग पंद्रह ★★★★★

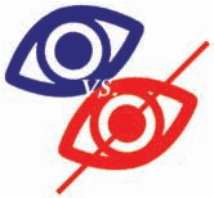

9. EYES VS BLINDNESS

मिट्ठू की Hobby थी– Chess खेलना। वह State व National Level पर खेल चुका था। उसका Dream था कि वह International Level पर भी खेले। October में New York में यह Competition होना था। मिट्ठू उसके लिए Select हो गया। पर August के Last Week में उसे Eye-Flu हो गया।

उसने आँखों में Medicine डाली तो वो Reaction कर गई। उसे आँखों से दिखना बंद हो गया। Dr. ने कहा– 'पूरी रोशनी आने में एक साल लग जाएगा।' मिट्ठू को अपना सपना टूटता दिखाई दिया। वह सुबक-सुबक कर रोने लगा।

उसकी मम्मी से यह देखा नहीं गया। वह उसे एक ज्ञानी गुरु जी के पास लेकर गई और बोली– 'गुरु जी! इसे संभालिए, इसने रो-रो कर बुरा हाल कर रखा है।' गुरु जी ने ध्यान लगाकर देखा कि मिट्ठू के मन में Chess Competition ही घूम रहा है।

गुरु जी बोले– 'Chess दिमाग का खेल है, न की आँखों का। इसलिए पहले Brain की Working को समझो। हमारा Brain Senses (Receptors) की Help से जानकारियाँ Collect करता है। Receptors दो तरह के होते हैं– चक्षु (Eyes) व अचक्षु (Other than Eyes) । Brain जब आँखों को Activate करता है, तो इसे चक्षु दर्शन कहते हैं। अचक्षु (Other Senses) को Activate करना अचक्षु दर्शन है।'

मिट्ठू– 'फिर क्या होता है?'

गुरु जी– 'फिर ज्ञान की प्रक्रिया शुरू होती है। ये Receptor अपने Signal Brain तक पहुँचाते हैं। उससे जीव की जो समझ (Understanding) तैयार होती है, उसे 'मति' कहते हैं। समझ सही है तो मति ज्ञान है, गलत है तो मति अज्ञान।'

गुरु जी– 'इसके अलावा जो हम किसी से सीखते हैं, पढ़ते हैं– उसे 'श्रुत' कहते हैं। सही-सही सीखना श्रुत ज्ञान है। गलत सीखना श्रुत अज्ञान है। मिट्ठू! तुम्हारी Understanding व Catching Power दोनों ही अच्छी हैं। यानि मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान तुम्हारे पास है, अचक्षु दर्शन भी है। सिर्फ चक्षु दर्शन में ही तो खराबी आई है, इसके लिए इतना घबराने की क्या ज़रूरत है? Chess को छूकर भी तो खेला जा सकता है।'

गुरु जी की बात सुनकर मिट्ठू के आँसू सूख गए। उसने घर आकर Magnetic Chess खरीद ली। छू-छूकर हर मोहरे की पहचान करके खेलना शुरू कर दिया। Chess Master से 700 चालें सीख ली। अपने मतिज्ञान से 100 नई चालें भी Develop कर ली।

October में वह New York पहुँच गया। वहाँ की Management ने Blind होने से मिट्ठू को खेलने से रोका, पर मिट्ठू की दृढ़ इच्छा को देखकर Permission दे दी। Competition शुरू हो गया। मिट्ठू एक के बाद एक Game जीतता चला गया। दर्शक सभी हैरान थे।

Final में मिट्ठू का मुकाबला American Mac से होना था। Mac बहुत चालाक व घमंडी था। उसके Teacher ने Final के लिए कुछ Tips देने को कहा तो Mac बोला– 'मुझे सब आता है।' Media में एक ही खबर घूम रही थी– 'Eyes vs Blindness.'

Final का Live Telecast देखने के लिए घर-घर में T.V. On हो गए। Game

शुरू हो गया। कुछ ही देर में Mac को लगा कि वो हार जाएगा। उसने Arbiter (Refree) को चुप रहने का इशारा किया और Cheating से चाल चलकर चिल्लाया– 'Checkmate.'

Americans ने Mac को Winner समझकर T.V. बंद की और जश्न मनाना शुरू कर दिया। मिट्ठू ने Mac की Cheating को पकड़ते हुए एक-एक करके पिछली 10 चालों को गिनाया और Refree को कहा– 'Sir! भगवान् सब देख रहा है, और इस समय आप भगवान् के Agent की तरह हो। मैं तो अंधा हूँ, पर आप सब कुछ देखकर भी अंधे क्यों बन रहे हो?'

इस बात से Refree की इंसानियत जाग उठी। उसने Mac की चाल को Reject कर दिया। Game फिर से शुरू हुआ, तो मिट्ठू ने झटपट उसे हराकर Trophy जीत ली। भारत में खुशी का माहौल छा गया। Americans को अगले दिन Newspaper से Mac की हार का पता चला।

भारत में लौटकर मिट्ठू सीधा गुरु जी के पास गया। उसकी आँखों में खुशी के आँसू थे। गुरु जी ने बताया कि Mac अपने घमंड व अज्ञान की वजह से हारा है।

मिट्ठू ने पूछा– 'क्या और भी ज्ञान होते हैं?' गुरु जी– 'हाँ, जैसे T.V. में हम बहुत दूर की चीज़ें देख सकते हैं, ऐसे आँखों से परे की चीज़ों को जानना अवधि

ज्ञान कहलाता है। ज्ञान से पहले T.V. को On (Activate) करने जैसा अवधि दर्शन होता है। दूर की चीज़ों को देखकर भी Americans की तरह Wrong Conclusion निकाला तो वह अवधि अज्ञान कहलाएगा।'

गुरु जी– 'किसी के मन को पढ़ने वाला ज्ञान मनः पर्याय ज्ञान है।'

मिट्ठू– 'आपके पास ये ज्ञान है ना?'

गुरु जी– 'हाँ, पर इससे भी बड़ा केवल ज्ञान, केवल दर्शन होता है। इनकी Help से भगवान् सब कुछ जानते हैं। इन सबको (5 ज्ञान, 3 अज्ञान, 4 दर्शन) उपयोग (Consciousness- संवेदनशीलता) कहते हैं।'

मिट्ठू– 'Guruji, You & Your Knowledge is Really Great.'

□□□

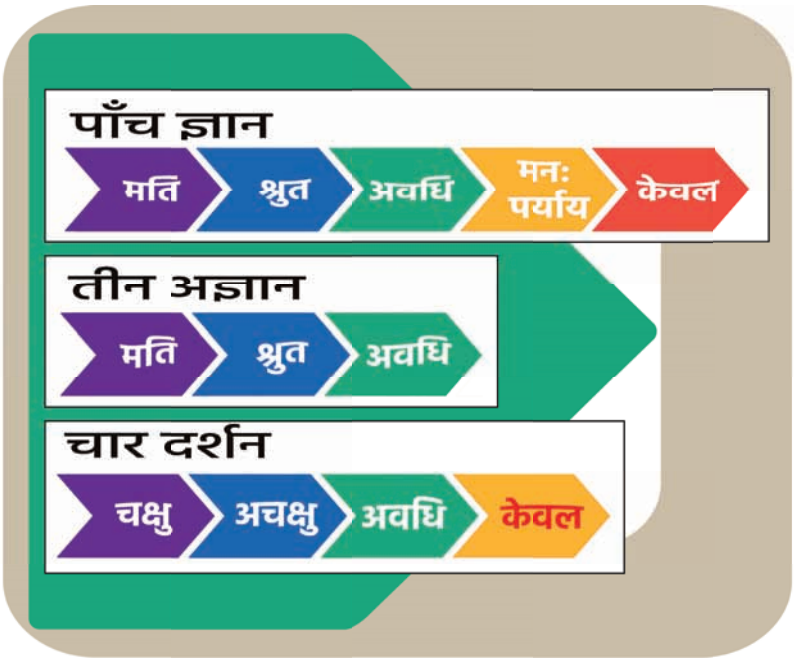

★★★★★ नौवां बोल – उपयोग बारह ★★★★★

10. समोसा

मोटू-पतलू की जोड़ी में मोटू Powerful व पतलू Intelligent था। मोटू की एक ही कमज़ोरी थी– समोसा। बिना समोसा खाए वो कुछ भी नहीं कर सकता था, इसलिए पतलू एक Box में दो-तीन समोसे हमेशा तैयार रखता था। ये जोड़ी उस इलाके के बदनाम चोर John को कई बार मज़ा चखा चुकी थी।

एक बार John ने पतलू को Kidnap करने की योजना बनाई। उसने डा. झटका की Lab से दो चीज़ें चुरा ली– एक नींद लाने वाला Spray, दूसरा बुद्धि को भ्रष्ट करने वाला Powder। Kidnapping के लिए उसने छुट्टी का दिन चुना, जिससे मोटू को समोसा न मिल सके।

John व उसके दो चेले 'John बनेगा Don'– की आवाज़ें लगाते हुए मोटू-पतलू के पास पहुँच गए। पतलू ने धीरे से कहा– 'मोटू, मुझे कुछ गड़बड़ लगती है।'

मोटू– 'इसने कुछ किया तो छोड़ूँगा नहीं।' इतने में John ने एकदम दोनों पर Spray छिड़क दिया, जिससे उन्हें नींद आ गई।

John बोला– 'चेलो! जल्दी से समोसे वाला Box ढूँढो।' Box मिल गया। उसमें तीन समोसे थे, तीनों ने एक-एक खा लिया। पतलू को रस्सियों से बांध लिया गया। Spray का असर कम होने पर दोनों की नींद खुली।

पतलू चिल्लाया– 'मोटू, मुझे बचाओ, मुझसे ये रस्सियाँ सहन नहीं हो रही।'

मोटू– 'तुम्हें तो पता है कि खाली पेट मेरे दिमाग की बत्ती नहीं जलती। बताओ, समोसा कहाँ है?' पतलू– 'Box में।'

John ने खाली Box दिखाते हुए कहा– 'इसमें! ही-ही-ही.... ।'

पतलू– 'मोटू, तुम्हारी ताकत का क्या फायदा है, जो चुपचाप सब देख रहे हो।'

मोटू– 'मैं मज़बूर हूँ, मुझे पहले समोसा चाहिए।' तभी John ने गन्ने के रस में Powder मिलाकर पतलू को ज़बरदस्ती वो रस पिला दिया। इससे पतलू की बुद्धि भ्रष्ट हो गई।

वह बोला– 'दोस्त जॉन, इस मोटू को इतना पीटो कि इसका पेट फट जाए।' मोटू सोच में पड़ गया। इतनी देर में John पतलू को लेकर कहीं दूर चला गया। अगले दिन मोटू को समोसा मिला। उसने Inspector चिंगम को कहा– 'Sir, आप कुछ करो!'

चिंगम– 'अभी मैं डोसा खाता जी।' मोटू– 'पहले मेरे दोस्त को ढूँढो।' चिंगम ने खोज करके बताया कि पतलू को मंदिर के पीछे छुपाया हुआ है।

मोटू ने डा. झटका से अपने नाखून में ऐसा Chemical डलवा लिया, जिससे वो किसी भी चीज़ को छूकर उसे समोसा बना सके। सारी तैयारी करके वह मंदिर के पास पहुँचा। वहाँ John के दोनों चेले पहरा दे रहे थे। मोटू ने दोनों की धुनाई की और मंदिर के पीछे पहुँच गया।

John को मालूम था कि मोटू की ताकत समोसे पर टिकी है, इसलिए उसने मज़ाक करते हुए कहा– 'लो, Cake खा लो।' मोटू ने Cake को नाखून से छूकर समोसा बना दिया। पतलू– 'वाह, मोटू! वाह!'

John चिल्लाया– 'हाय! ये क्या हुआ? अब मैं मरा, कोई मुझे बचाओ!' John की खूब पिटाई हुई।

पतलू– 'गलत काम करते हुए बड़े उछल रहे थे। याद रखो, कर्म का फल भुगतना ही पड़ता है।' मोटू– 'ये कर्म क्या होते हैं?'

पतलू– 'हम जो भी काम करते हैं या सोचते हैं, उसके संस्कार कर्म बनकर हमसे Attach हो जाते हैं, और फिर धीरे-धीरे अपना असर दिखाते हैं।'

मोटू– 'मुझे इन्हें समझना है।' पतलू– 'कर्म के 8 भेद हैं। इनमें से 4 कर्म Soul पर व 4 कर्म Body पर Effect डालते हैं।'

मोटू– 'Soul पर Effect डालने वाले कर्म कौन से हैं?'

पतलू– 'Soul में Infinite Power है, पर अंतराय कर्म इस Power को रोकता है। इस कर्म की वजह से ही मैं कमज़ोर हूँ। दूसरा ज्ञानावरणीय कर्म जीव को अज्ञानी बनाता है। यह कर्म तुम पर ज़्यादा हावी है।'

मोटू– 'तभी तो शरीर की तरह मेरी बुद्धि भी मोटी है।'

पतलू– 'तीसरा दर्शनावरणीय कर्म Spray की तरह है। यह जीव की Consciousness (चेतना) को रोककर उसे सुला देता है। चौथा मोहनीय कर्म Powder की तरह जीव को मोहित कर देता है, जिससे जीव गलत Decision लेता है व गलत राह पर चलता है।'

मोटू– 'अब मैं समझा, तुम Juice पीने के बाद मुझे क्यों पिटवा रहे थे। अच्छा, बाकी 4 कर्म कौन से हैं?'

पतलू– 'उन चार कर्मों में एक नाम कर्म है। एडी से चोटी तक पूरे शरीर की रचना इसी कर्म से होती है। वेदनीय कर्म से Body की Tolerance Power तैयार होती है, उससे फिर सुख-दुख का अनुभव होता है।'

मोटू– 'जैसे तुम रस्सियों से परेशान हो गए थे!'

पतलू– 'जी हाँ! अगला गोत्र कर्म है। इसके प्रभाव से जीव अपने पूर्वजों से Healthy-Unhealthy Genes को Inherit करता है, जिनसे उसकी अच्छी-बुरी Reputation बनती है। जैसे John ने पूर्वजों से चोरी के संस्कार लिए तो वह बदनामी का जीवन जी रहा है। Last आयुष्य कर्म है, यह हमारी Age को Determine करता है।'

मोटू– 'जीव ज़्यादा Powerful है या कर्म!'

पतलू– 'जीव! पर तब, जब उसे आत्म-विश्वास का समोसा मिल जाता है।'

मोटू– 'समोसा! मेरे मुँह में पानी आ रहा है। John के बच्चे! ला एक समोसा!'

□□□

★★★★★ दसवां बोल – कर्म आठ ★★★★★

11. ADVENTUROUS JOURNEY

उदयपुर की Mount Academy बच्चों को घुमाने Mount Abu लेकर गई। बच्चे रात भर मौज-मस्ती करते रहे। सुबह 4 बजे Trekking करनी थी, पर अधिकांश बच्चे पहाड़ की ऊँचाई देखकर घबरा गए। केवल 7 बच्चे (अभि, निपुण, सम्यक्, अंश, रयान, वंश व Joy) तैयार हुए।

उन्होंने अंधेरे में ही 1st Round की चढ़ाई पूरी कर ली। सूर्योदय होने से चारों तरफ उजाला हो गया। तभी अभि को नीचे वाले दोस्तों की याद आने लगी।

वह बोला– 'मुझे वापिस जाना है।' Guide ने उसे सीढ़ियों का रास्ता बता दिया। वह वापिस चला गया। निपुण को भी अजीब सी Feeling होने लगी।

वह बोला– 'मुझे इस रोशनी में दिक्कत हो रही है।' Guide ने उसे Dim Light वाले Tent में भेजते हुए कहा– 'तुम आराम से बैठकर सोच लो– आगे जाना है या वापिस लौटना है।'

Guide ने बाकी बच्चों से कहा– 'आगे की चढ़ाई थोड़ी Difficult है, इसलिए भारी सामान यहीं छोड़ना होगा।' सम्यक् सामान छोड़ने के लिए तैयार नहीं हुआ, तो उसे

वहीं छोड़ दिया। बाकी बच्चों ने 2nd Round की चढ़ाई की।

अंश के साँस इतने फूल गए कि उसकी वहीं बस हो गई। 3rd Round और भी कठिन था, इसलिए सारा सामान वहीं छोड़कर तीनों बहादुर बच्चे (रयान, वंश व Joy) ऊपर चढ़े।

वहाँ बहुत सारे बंदर थे। जैसे ही बच्चों का ध्यान इधर-उधर होता, बंदर उन्हें परेशान कर देते।

Guide ने पहाड़ की चोटी पर दिलवाड़ा मंदिर की ओर इशारा करते हुए बताया कि– 'वो आखिरी मंज़िल है। वहाँ तक का सारा रास्ता No Rest Zone व खतरनाक है। पहले बिल्कुल खड़ी चढ़ाई है, फिर आगे छलाँगे लगा कर पहाड़ियाँ पार करनी होंगी। उन पहाड़ियों पर जंगली Panda (भालू जैसा जीव) रहते हैं। आखिरी पहाड़ी पर एक छोटा Panda मिलेगा। उन सबके चंगुल से बच गए तो मंदिर के दरवाज़े तक पहुँच जाओगे। Gate पर तीन तोते बैठे होंगे। जब तक उन्हें छोटा Panda दिखता रहेगा, वे तुम्हें अंदर नहीं जाने देंगे।'

रयान डरते हुए बोला– 'मुझे आगे नहीं जाना, मैं बंदरों के बीच ही रह लूँगा।' वंश कुछ ज़्यादा Excited था, वह बोला– 'पहले मैं जाता हूँ।' वह पहाड़ी पर फटाफट चढ़ गया। फिर छलाँगे लगाने लगा। आगे उसे Pandas दिखाई देने लगे।

वंश को एक Idea आया। वह चुटकी बजाता और Panda सो जाता। इस तरह चुटकी बजा–बजा कर, छोटे Panda को भी सुलाकर वह मंदिर के Gate तक पहुँच गया। इससे उसे अपार खुशी मिली।

Gate पर तीन तोते बैठे थे। वंश ने सोचा कि छोटू (छोटा Panda) को वहाँ से हटाना पड़ेगा। वह वापिस गया तो छोटू एकदम उठकर खड़ा हो गया और उसने वंश को उठाकर पीछे पटक दिया। वहाँ के जागे हुए Pandas ने भी उसे उछाल-उछाल कर वापिस रयान के पास पहुँचा दिया।

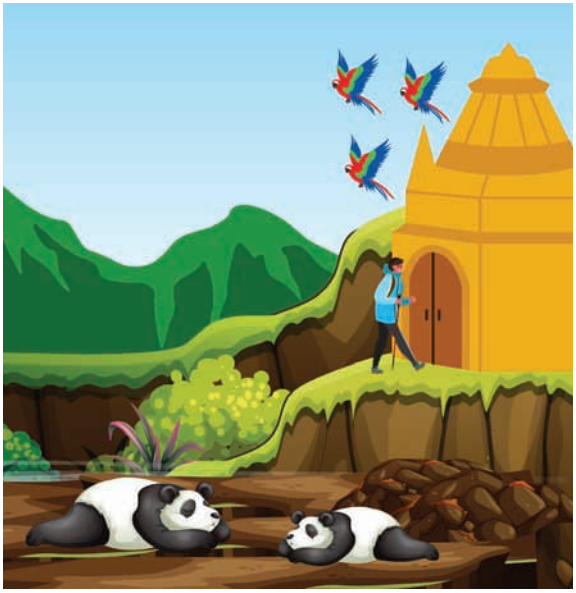

Joy बोला– 'अब मेरा कमाल देखो!' वह ऊपर चढ़ता चला गया। उसने Pandas को Kick लगा-लगा कर घाटी के नीचे पहुँचा दिया। मंदिर के पास पहुँचकर उसने चैन

की साँस ली। वह आगे बढ़ा तो Gate पर बैठे तीनों तोते भी उड़ गए।

मंदिर के पुजारी ने तिलक लगाकर Joy का स्वागत किया। इतनी ऊँचाई से Joy मानो पूरे संसार को देख सकता था। पुजारी ने उसकी साहसिक यात्रा का वर्णन सुनकर कहा– 'ये यात्रा सिर्फ तुम्हारी नहीं, संसार के सभी जीवों की है। वे अलग-अलग Stages (गुणस्थान) पर अपना जीवन बिता रहे हैं।'

Joy– 'वो कैसे?'

पुजारी– 'दुनिया के ज़्यादातर जीव अज्ञान के अंधेरे में रहते हैं और खाने-पीने-सोने में ही मस्त रहते हैं, उनकी यह अवस्था मिथ्यात्व गुणस्थान (1) कहलाती है। 7 बच्चों की तरह कुछ जीव इस अंधेरी ज़िंदगी से ऊपर उठकर रोशनी (सम्यग्दृष्टि) को प्राप्त करते हैं। उन्हें ये विश्वास हो जाता है कि– आत्मा अपनी शुद्धि करके परमात्मा बन सकता है।'

Joy– 'क्या वो भगवान् बन जाते हैं?'

पुजारी– 'नहीं। सम्यग्दृष्टि को पाकर भी कुछ जीव अभि की तरह मोह से भ्रमित होकर वापिस मिथ्यात्व में चले जाते हैं। यह वापिस लौटने की अवस्था सास्वादन गुणस्थान (2) है। कुछ जीव निपुण की तरह 'ऊपर जाऊँ या नीचे'– इस दुविधा में रहते हैं, वे मिश्र गुणस्थान (3) में हैं। सम्यग्दृष्टि जीव जब तक बुराईयों को नहीं छोड़ता, तब तक अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान (4) कहलाता है।'

Joy– 'जैसे सम्यक् ने सामान नहीं छोड़ा तो वह आगे नहीं बढ़ सका।'

पुजारी– 'बिल्कुल सही। भारी सामान की तरह बड़ी-बड़ी बुराईयों को छोड़ने पर देशविरति श्रावक गुणस्थान (5) होता है। अंश की तरह कुछ जीव यहाँ तक

पहुँचते हैं। सभी बुराईयों को छोड़ने वाले साधु बन जाते हैं। जब वे छोटे-2 दोषों के बंदरों से छले जाते हैं, तब प्रमादी साधु गुणस्थान (6) होता है और जब पूरे Alert रहते हैं, तब अप्रमादी साधु गुणस्थान (7) होता है।'

Joy बड़े ध्यान से सुन रहा था, उसने पूछा– 'इसके बाद?'

पुजारी– 'फिर जीव को पुराने संस्कारों (कर्म) के Pandas का सामना करना पड़ता है। उसके दो तरीके हैं– उपशम और क्षय। कर्म रूपी Pandas को सुलाना 'उपशम' है, नष्ट करना 'क्षय' है। इसमें पहले खड़ी चढ़ाई करने की तरह कर्मों से सामना करने की तैयारी अपूर्वकरण गुणस्थान (8) है। फिर कर्मों के Pandas को पार करते जाना अनिवृत्तिकरण गुणस्थान (9) है।'

Joy– 'और वो छोटा Panda?'

पुजारी– 'हाँ! छोटे Panda जैसे ज़रा से मोह तक पहुँचना सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान (10) है। उसे सुलाने पर उपशांत मोह गुणस्थान (11) आता है। यहाँ पर जीव थोड़ा सा विश्राम कर वंश की तरह मोह के छोटू के पास जाता है और गिरता-गिरता छठे गुणस्थान तक पहुँच जाता है।'

पुजारी– 'छोटू को नष्ट करने वाला क्षीण मोह गुणस्थान (12) में पहुँच जाता है। वह आगे बढ़ता है तो तीनों तोते (**ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, अन्तराय कर्म**) उड़ जाते हैं और जीव को परमात्म-पद की प्रतिमा मिल जाती है। जब तक वह हलचल (योग) में रहता है, तब तक सयोगी केवली गुणस्थान (13) होता है। जब वह हलचल बंद करके ध्यान में चला

जाएगा, तब अयोगी केवली गुणस्थान (14) आ जाएगा। इसके बाद वह जीव सिद्ध बन जाता है।'

Joy– 'पुजारी जी, मैंने Mount Abu की यात्रा तो कर ली। अब आप आशीर्वाद दें कि इस गुणस्थान की यात्रा में भी Top तक पहुँच पाऊँ!'

पुजारी– 'तुम्हारा कल्याण हो बेटा!'

□□□

★★★★★ 11वां बोल – गुणस्थान चौदह ★★★★★

12. गोलगप्पे मेरे FAVOURITE हैं!

Harry को Cold हो गया। Doctor ने कहा– 'तुम गरम-गरम Coffee पीओ।' Harry बोला– 'वो मुझे कड़वी लगती है।'

Doctor– 'कॉफी से आराम मिलेगा, तुम आँखें बंद करके पी जाओ।' Harry को बिना मन के कॉफी पीनी पड़ी। Doctor ने उसे तीन दिन तक गोलगप्पे खाने से मना किया तो वह बोला– 'वो तो मेरे Favourite हैं।'

Doctor– 'बेटा, अभी वो नुकसान करेंगे।'

Harry– 'ये क्या है डा.सा.? जो मुझे अच्छा लगता है, उसे मना करते हो। जो खराब लगता है, उसे फायदेमंद बताते हो।'

Doctor– 'मैं तुम्हें एक Chart दिखाता हूँ।'

Sense-Organs	Objects	Types of Qualities	Physical Effect	Mental Effect	Total Reactions
	जीव, अजीव, मिश्र	विषय	शुभ-अशुभ	राग-द्वेष	विकार
1- Ear	(3) →	3(Words)	X 2	X 2	12
2- Eyes	3 X	5(Colors)	X 2	X 2	60
3- Nose	3 X	2(Smell)	← (2)	X 2	12
4-Tongue	3 X	5(Tastes)	X 2	X 2	60
5- Skin	3 X	8(Touch)	X 2	X 2	96
		23 विषय			**240 विकार**

3 Types of Words– जीव की आवाज़, अजीव की आवाज़, जीव-अजीव की Mix आवाज़

5 Colors– काला, नीला, लाल, पीला, सफ़ेद

2 Smells– सुगंध (Fragrance), दुर्गंध (Foul Smell)

5 Tastes– तीखा (Spicy) कड़वा (Bitter) खट्टा (Sour) कषैला (Bitter+ Sour) मीठा (Sweet)

8 Touches– खुरदरा (Rough) सुहाला (Soft) हल्का (Light) भारी (Heavy) ठंडा (Cold) गर्म (Hot) रूखा (Dry) चिकना (Oily)

Harry– 'डा.सा.! मैं इतना तो समझ गया कि हमारी Senses जीव, अजीव व मिश्र यानि Living, Non-Living & Semi-Living की Different Qualities को Catch करती हैं। जैसे कान जीव आदि के शब्दों को पकड़ते हैं, आँखें उनके Colors देखती हैं..... । पर ये Physical Effect, यानि शुभ-अशुभ क्या है?'

Doctor– 'ये Different Qualities अगर हमारी Senses व Body को Suit करती हैं तो 'शुभ' कहलाती हैं, Suit नहीं करती तो 'अशुभ'। जैसे मिठाई बच्चे के लिए शुभ है, पर Sugar-Patient के लिए अशुभ। ये Effect बिल्कुल Natural है। इससे आगे बढ़ना यानि उन Qualities को Like (राग), Dislike (द्वेष) करना हानिकारक है।'

Harry– 'अशुभ को तो सब Dislike ही करेंगे, उसे पसंद कौन करेगा?'

Doctor– 'क्या तुमने गोलगप्पे की इच्छा करके अशुभ को पसंद नहीं किया?'

Harry– 'हाँ, किया। एक बात और बताएँ। शुभ से नफरत करना, अशुभ को पसंद करना– ये दोनों गलत हैं, ये मैं मानता हूँ, पर शुभ को पसंद करने व अशुभ से नफरत करने में क्या नुकसान है?'

Doctor– 'Very Good Question. देखो, कोई चीज़ शुभ है तो उसे Use करना गलत नहीं है, पर जब कोई उसे अपनी पसंद या Favourite चीज़ मानने लगता है, तब Excess में उसका Use करने लगता है And 'Excess of Everything Is Bad.'

Harry– 'I Agree. क्योंकि किशमिश मेरे लिए शुभ है, पर मैं शौक-शौक में इतनी खा जाता हूँ कि मेरे चेहरे पर Pimples हो जाते हैं।'

Doctor– 'इसी तरह अशुभ चीज़ों से दूर रहना अच्छा है, पर उन चीज़ों के प्रति नफ़रत (Negativity) का भाव रखना गलत है। जैसे Sugar के Patient का मिठाई न खाना अच्छा है। पर वह यदि मिठाई से द्वेष करेगा, तो धीरे-धीरे मिठाई की दुकानों व मिठाई खाने वालों से भी नफ़रत करने लगेगा।'

Harry– 'इसका मतलब ये हुआ कि जितने भी Reactions हैं, वो सब खतरे की निशानी हैं। एक बात और डा.सा.! Ear के Column में Object को व Nose के Column में Physical Effect को Bracket ( ) में क्यों रखा है?'

Doctor– 'Words की Qualities को समझना थोड़ा Difficult है, इसलिए उनके Base (जीव, अजीव, मिश्र) को ही Quality के रूप में दिखाया है। इसी तरह Nose के Column में गंध के Physical Effect को Quality में ही शामिल कर लिया गया है। क्योंकि आम जनता सुगंध व शुभ गंध को एवं दुर्गंध व अशुभ गंध को एक ही समझती है।'

Harry– 'Thank you, डा.सा.! आज मैंने पहली बार आपके Chart से जाना है कि हमारी 5 Senses 23 Qualities को पकड़ती हैं और इनके बढ़ते-बढ़ते 240 Reactions (विकार) हो सकते हैं। इन Reactions से बचने के लिए मैंने कुछ संकल्प किए हैं।' Doctor– 'कौन से संकल्प?'

Harry– '1. मैं High Volume पर गाने नहीं सुनूँगा। 2. T.V., Mobile के Excess Use से बचूँगा। 3. तीखी Smell वाले Perfumes से दूर रहूँगा। 4. भूख से ज़्यादा नहीं खाऊँगा 5. ज़्यादा Soft गद्दे पर नहीं सोऊँगा।'

Doctor– 'Good Wishes!'

□□□

*******12वां बोल –5 इंद्रियों के 23 विषय और 240 विकार*******

13. उल्टा-पुल्टा

चिंटू एक ज़िद्दी और अड़ियल लड़का था। जो मन में आता, वो करता। गली में चलता-चलता जानवरों को Pin चुभो देता। उन्हें ऐसे परेशान करता जैसे उनमें जान ही न हो। उसके पास एक Teddy था। उसे वह इतना प्यार करता कि किसी दूसरे को हाथ भी नहीं लगाने देता।

चिंटू के Class Teacher राम Sir बहुत समझदार व्यक्ति थे। वे बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ Moral Values भी सिखाते थे। पर चिंटू राम Sir व उनकी शिक्षाओं को बेकार समझता व कहता– 'असली Teacher तो कांति Sir हैं। न वे किसी को पढ़ने के लिए Force करते हैं, न फालतू का उपदेश झाड़ते हैं। उन्हें तो बस अच्छी-सी Fees दो और पूरे साल मस्ती करो। Exams में वे खुद ही Cheating करवाकर Pass भी करवा देते हैं।'

चिंटू की मस्ती को देखकर कई बच्चे राम Sir से कहते– 'Sir! चिंटू कितना Free रहता है और हम सारा दिन किताबों से बंधे रहते हैं।'

राम Sir कहते– 'समय बताएगा– कौन Free है, कौन बंधा हुआ है।'

चिंटू Cheating के सहारे कई Classes Pass कर गया, पर 10th Board में Fail हो गया। उसके पापा ने उसकी खूब पिटाई की। पर वह कांति Sir के

बहकावे में आता रहा और हर साल Fail होता रहा। आखिर उसे स्कूल से निकाल दिया गया।

वह नौकरी की तलाश में जगह-जगह घूमा। अंत में उसे अपने ही School में Peon की नौकरी मिली। उसे बहुत Shy Feel होता। एक दिन वह राम Sir के Office की सफाई कर रहा था। राम Sir के आते ही वह सुबक-सुबक कर रोने लगा।

राम Sir उसे हौंसला देते हुए बोले– 'बेटा! तुम School के Exams में तो Fail हो गए, पर ज़िंदगी के Exam में Fail मत होना।'

चिंटू ने हैरानी से पूछा– 'ज़िंदगी का Exam!'

राम Sir– 'हाँ! हमारी Life एक बहुत बड़ा Exam है। उसमें सफल होने के लिए सबसे ज़रूरी है– मिथ्यात्व यानि गलत सोच से दूर रहना।'

चिंटू– 'ये कैसे पता चलेगा कि हमारी सोच सही है या गलत?'

राम Sir– 'मैं तुम्हें गलत सोच के एक-दो नहीं, ऐसे 10 Examples देता हूँ। इससे तुम सही-गलत में फर्क कर पाओगे। पहला Example है– जीव को अजीव समझना (1)– ऐसी समझ वाला दूसरों को परेशान करता है। अन्य जीवों के प्रति उसकी Sympathy खत्म हो जाती है।'

चिंटू– 'मैंने भी जानवरों को बहुत सताया है। एक दिन गली के कुत्ते ने मुझे काटा, तो मुझे समझ आया कि इनमें भी जान होती है।'

राम Sir– 'इससे उल्टा अजीव को जीव समझने (2) वाला उस अजीव (Non-Living) से इतना Attached हो जाता है कि वह असली जीवों को Ignore करने लगता है।'

चिंटू ने सोचा– 'मैंने भी तो अपने Teddy के लिए कितनों से लड़ाई की है।'

राम Sir– 'अगली सोच है– असाधु को साधु समझना (3)– कुछ अज्ञानी व स्वार्थी लोग ढोंगी बाबाओं के चंगुल में फँसकर उन्हें ही सच्चा गुरु मानने लगते हैं। वे ढोंगी उन्हें तंत्र-मंत्रों से फुसलाकर जादू-टोना, पशु-बलि जैसे काम करवाते हैं। भोले भक्त उस अधर्म को धर्म समझकर (4) करने लगते हैं।'

चिंटू– 'कांति Sir को सही मानने का फल मुझे मिल रहा है।'

राम Sir– '5th Example है– संसार मार्ग को मोक्ष मार्ग समझना– संसार का मतलब है दुख, मोक्ष का मतलब है सुख। दुख देने वाले कारणों को सुख का कारण मानना।'

चिंटू– 'जैसे मैंने Cheating के रास्ते को सफलता का रास्ता समझा था!'

राम Sir– 'बिल्कुल सही। इसके अलावा कुछ लोगों में अपनी बात को बढ़ा-चढ़ाकर बताने की, मानने की आदत होती है। वे अपने पूर्वजों, कुल-देवताओं, धर्म-गुरुओं को ज़्यादा Highlight करते हुए भगवान् (मुक्त) तक मान बैठते हैं। यह अमुक्त को मुक्त समझना (6) है।'

राम Sir– 'गलत को सही मानने वाला सही को गलत ठहराने लगता है। वह साधु को असाधु समझता (7) है, यानि सच्चे गुरु को भी ढोंगी मानता है।'

चिंटू– 'Sir! मैंने हमेशा आपको गलत समझकर यही भूल की है।'

राम Sir– 'वह धर्म को अधर्म समझता (8) है। उसे सच्चाई, ईमानदारी, प्रभु-भक्ति– ये सब बेकार लगते हैं। इसके साथ वह मोक्ष मार्ग को संसार मार्ग (9) अर्थात् सुख की राह को दुख की राह समझता है।'

चिंटू– 'Sir! मैं भी मेहनती बच्चों को देखकर समझता था कि ये व्यर्थ ही परेशान हो रहे हैं। मैं कितना गलत था।'

राम Sir– 'Last 10th Example है– मुक्त को अमुक्त समझना– यानि भगवान् को भी भगवान् न मानना। कुछ समझे?'

चिंटू– 'Sir, आपने मेरी आँखें खोल दी हैं। मेरी गलत सोच ने मुझे कितना नीचे गिरा दिया। पर अब मैं और नीचे नहीं गिरूँगा। अपनी Life के Exam में कभी Fail नहीं होऊँगा।'

□□□

✶✶✶✶✶ 13वां बोल – मिथ्यात्व के 10 भेद ✶✶✶✶✶

14. धमाका सिंह के धमाके

रामगढ़ शहर में डाकू धमाका सिंह का आतंक फैला हुआ था। लूटपाट की घटनाएँ बढ़ती जा रही थी। लोग अपनी शिकायत लेकर पास के गाँव में चाचा चौधरी के पास पहुँचे। उनकी पीड़ा सुनकर चाचा चौधरी का दोस्त साबू पहलवान बोला– 'धमाका सिंह को मज़ा चखाना पड़ेगा।'

तभी एक आदमी दौड़ता हुआ आया और बोला– 'धमाका सिंह को हमारे यहाँ आने का पता लग गया है। उसने धमकी दी है कि वह अगले 15 दिनों में Bomb Blast करके पूरे शहर को तबाह कर डालेगा।'

चाचा चौधरी– 'ओह! इंसान की बुद्धि को क्या हो गया है? जीव के लिए जो अजीव पदार्थ उपयोगी हो सकते थे, वह उन्हीं को Bomb आदि के रूप में Use करके जीवों का विनाश कर रहा है। हमें इस विनाश को रोकना होगा।'

रामगढ़वासी– 'पर कैसे?' चाचा चौधरी का दिमाग Computer से भी तेज़ चलने लगा। वे बोले– 'मुझे धमाका सिंह की सारी Report चाहिए।' Report से पता चला कि– 'धमाका सिंह के 500 साथी हैं। उनमें से 250 शहर के बाहर हैं व 250 शहर के अंदर। वे शहर में जगह-जगह Bombs रखने की तैयारी में हैं।'

चाचा चौधरी– 'हमें पहले बाहर वाले डाकुओं को अंदर आने से रोकना है। इसके लिए शहर के जो 20 आस्रव (Entry करने के रास्ते) हैं, उन्हें Seal कर दो।' किसी ने बताया कि हर रास्ते पर एक-एक Guard है, पर वे सब आलसी व शराबी हैं।

चाचा चौधरी– 'उन Guards को खुद का ही होश नहीं है, तो वे डाकुओं को कैसे रोक पाएँगे? तुम एक काम करो– संवर Company के 20 कमांडो वहाँ तैनात कर दो। वे इतने समझदार व Alert हैं कि डाकू तो क्या, उनकी परछाई को भी अंदर नहीं आने देंगे।'

इस प्रकार पूरा शहर Seal कर दिया गया। पर शहर के अंदर वाले डाकू कुछ इलाकों में बम Fit करने में कामयाब हो गए। कुछ मोहल्लों में विस्फोट भी हुए। चाचा चौधरी अपने साथियों के साथ तुरंत वहाँ पहुँचे। राहत कार्य शुरू हो गया। दूसरे मोहल्ले के लोग पीड़ितों को भोजन, पानी, वस्त्र आदि बाँटने लगे।

यह सब देखकर चाचा चौधरी की आँखों में पानी आ गया। वे बोले– 'कहाँ तो वे डाकू हैं, जो लोगों का माल लूटकर, जान लेकर पाप कमा रहे हैं और कहाँ ये भले लोग हैं, जो इन दुखियों की मदद करके पुण्य कमा रहे हैं।'

तभी सूचना मिली कि धमाका सिंह ने अन्य 15 जगह पर भी Bombs Fit किए हुए हैं, जिनमें से चार जल्दी ही Blast होने वाले हैं। बाकी 11 Bombs का Remote Control धमाका सिंह के हाथ में है।

चाचा चौधरी– 'साबू! किसी भी तरह उन 4 Bombs को फटने से रोकना है।'

साबू ने बम फटने से सिर्फ 2 Seconds पहले अपनी जान पर खेलकर उनको Defuse कर दिया। इस सफलता से चाचा चौधरी की Team में इतना जोश आया कि उसने सीधे धमाका सिंह पर Attack कर दिया व उसके हाथ से

Remote छीनकर तोड़ दिया।

धमाका सिंह– 'मुझे माफ़ कर दो।' चाचा चौधरी ने उसे साबू के हवाले कर दिया। साबू ने उसकी वो हालत की कि उसने फिर कभी रामगढ़ की तरफ मुँह उठाकर भी नहीं देखा। उसके सब साथी भी भाग गए।

शहर में शांति हो गई। 'यह शांति बनी रहे'– इस भावना से रामगढ़वासी पास के गाँव में एक संत के दर्शन करने गए। उन्हें सारी घटना का पता लगा तो वे बोले– 'इस घटना से हमें 9 तत्त्वों (Religious Subjects) का ज्ञान होता है।'

रामगढ़वासी – 'कौन से 9 तत्त्व?' संत– 'सुनिए, नौ तत्त्व इस प्रकार हैं:–

1. जीव– जिसमें Life होती है, ऐसे Living Being को 'जीव' कहते हैं। Senses के Development के आधार पर इसके 14 भेद हैं।
2. अजीव– जिसमें Life नहीं है, वो अजीव (Non living) है। जैसे Time, Space, Matter (Bomb) etc. इसके भी 14 भेद हैं।
3. पुण्य– जीव के अच्छे विचार (Good Thoughts), अच्छी वाणी (Good Words) व अच्छी क्रियाओं (Good Actions) को पुण्य कहते हैं। इसके 9 तरीके हैं, जैसे भूखे को भोजन खिलाना, पानी पिलाना आदि।
4. पाप– जीव के बुरे विचार, कड़वी बोली, गलत क्रियाओं को पाप कहते हैं। इसके 18 भेद हैं।
5. बन्ध– जैसे डाकुओं ने शहर में बम Fit किए, ऐसे जीव के साथ अच्छे व बुरे संस्कार (कर्म) जुड़ जाते हैं, इसे बन्ध कहते हैं। इसके 4 Methods हैं।
6. आस्रव– इन संस्कारों (कर्मों) के आने के कारणों को आस्रव कहते हैं। रामगढ़ शहर की तरह इसके 20 रास्ते हैं। जैसे अज्ञान, मोह आदि।
7. संवर– इन कर्मों को आने से रोकने वाला तत्त्व है संवर। इसके ज्ञान,

Alertness आदि 20 कमांडो हैं।

8. निर्जरा– कर्म रूपी संस्कारों में से कुछ संस्कारों को खत्म करना निर्जरा है। जैसे साबू ने 15 में से 4 Bombs को Defuse कर दिया था। निर्जरा के 12 तरीके हैं। जैसे तप करना, ध्यान करना आदि।

9. मोक्ष– सभी कर्मों को खत्म कर देना मोक्ष है। Good Faith, Good Conduct आदि इसके 4 उपाय हैं।'

संत– 'अब आप गिनकर बताएँ कि इन 9 तत्त्वों के कुल कितने भेद हुए?'

सब लोग मिलकर बोले– '115 (14+14+9+18+4+20+20+12+4)'

संत– 'बिल्कुल सही।' रामगढ़वासी– 'जैसे हमारे शहर को सब डाकुओं से मुक्ति मिली, ऐसे हम कर्मों से भी मुक्त होने का प्रयास करेंगे।'

□□□

★★★★★ 14वां बोल – नौ तत्त्वों के 115 भेद ★★★★★

15. क्या आपने बुखार को देखा है?

धरती की सैर करते हुए नारद जी वैकुण्ठ में ब्रह्मा जी के पास पहुँचे। वे ब्रह्मा जी को बोले– 'प्रभो! मैं धरती पर 'आत्मा' की चर्चा सुन कर आ रहा हूँ। क्या आप मुझे आत्मा दिखा सकते हैं?'

ब्रह्मा– 'नारद जी, किसी बच्चे को बुखार हो जाए और वह कहे कि उसे बुखार देखना है, तो क्या उसे बुखार दिखाया जा सकता है?'

नारद– 'Impossible.' ब्रह्मा– 'इसी तरह आत्मा को दिखाया नहीं जा सकता।' यह सुनकर नारद जी उदास हो गए।

ब्रह्मा– 'आप उदास मत हों। मैं आपका समाधान करूँगा, पर पहले आप साबरमती का गुरुकुल देखकर आइए।' नारद जी गुरुकुल में पहुँच गए। वहाँ के आचार्य ने बताया– 'इस गुरुकुल के दो हिस्से हैं। Part I में चार Block हैं– A,B,C,D व Part II में दो– G,M. पहले हम Part I में चलते हैं।'

वे Block-A 'Active' में पहुँचे। इसमें Yoga की Classes चल रही थी। नारद जी ने भी 15 Minutes Yoga करके खुद को Warm-Up किया। Block-B 'Bravo' में बच्चों को जूडो- कराटे सिखाकर Brave (वीर) बनाया जा रहा था।

नारद जी बोले– 'मैं अपनी ताकत आज़माऊँ?'

आचार्य– 'आप रहने दो।' मना करने के बावजूद नारद जी ने ज़ोर से एक ईंट

पर प्रहार कर दिया। ईंट को तो कुछ नहीं हुआ, पर नारद जी के हाथ में Fracture हो गया। उन्हें जल्दी से First Aid दी गई।

आचार्य ने पूछा– 'आगे चलना है?'

नारद– 'बिल्कुल, मैं पूरा गुरुकुल देखकर ही जाऊँगा।' वे आगे बढ़े। Block- C 'Concentration Hall' में एक बड़ी दीवार पर चित्रकारी की हुई थी।

आचार्य– 'इसमें 50 जानवरों के चेहरे छुपे हुए हैं।'

नारद– 'मैं एक घंटे में सारे चेहरे ढूँढकर दिखाऊँगा।' एक घंटे तक नारद जी ढूँढते रहे, पर उन्हें एक भी चेहरा नज़र नहीं आया। थककर वे Block-D 'Darshan' में पहुँचे। वहाँ Philosophy पढ़ाई जा रही थी। ये Subject इतना Typical था कि बच्चों को नींद के झटके आ रहे थे। फिर भी कुछ बच्चे उस Subject को समझने की कोशिश कर रहे थे।

इतने में Recess की घंटी बज गई। बच्चों का चिल्लाना, खेलना शुरू हो गया। कुछ बच्चे खेल-खेल में झगड़ा करने लगे व एक-दूसरे से मारपीट करने लगे।

नारद जी ने कहा– 'आप इन कसाई जैसे बच्चों को सज़ा क्यों नहीं देते?'

आचार्य– 'यहाँ पिटाई की मनाही है। इन शरारती बच्चों की यही सज़ा है कि

इन्हें Part II में Enter नहीं करने दिया जाता।'

नारद– 'अरे! Part II अभी बाकी है। चलिए, जल्दी चलिए।' Block-G 'Gyaan' में बच्चे Special Books पढ़ रहे थे, जिससे वे Scholar बन सकें। Block-M 'Moral Science' में बच्चों को जीवन-निर्माण की बातें सिखाई जा रही थी।

इन दोनों Blocks को देखकर नारद जी खुश होकर बोले– 'आचार्य जी, आपका बहुत–बहुत धन्यवाद! अब मैं चलता हूँ।' ब्रह्मा जी के पास आकर नारद जी ने सारा घटनाचक्र सुनाया और कहा– 'अब मुझे आत्मा का ज्ञान दीजिए।'

ब्रह्मा– 'आत्मा एक Living Force है, इसे द्रव्य आत्मा कहते हैं। इसे देखा नहीं जा सकता, Feel किया जा सकता है। जैसे Testing से बुखार के Viral, Malaria, डेंगू आदि भेदों का पता चल जाता है, ऐसे Different Qualities से आत्मा को समझा जा सकता है।'

नारद– 'वो कैसे?' ब्रह्मा– 'आत्मा में Infinite Powers हैं, जो शरीर के माध्यम से प्रकट होती हैं। इसलिए शरीर में रहने वाली आत्मा को वीर आत्मा (वीर्य आत्मा) कहते हैं। आत्मा में जब Thinking, Speaking व Physical Working के द्वारा Vibrations होती हैं, तब वह योग आत्मा कहलाती है।'

नारद– 'Bravo' Block में मैंने वीर आत्मा और 'Active' Block में योग आत्मा को देखा है।'

ब्रह्मा– 'Block-'C' की तरह जो जीव ज्ञान पाने के लिए Concentrate करते हैं, वे उपयोग आत्मा हैं। जो किसी पर विश्वास रखते हैं, श्रद्धा करते हैं, वे दर्शन आत्मा हैं। जिनमें क्रोध, Ego, लालच जैसी बुराईयाँ हैं, वे कषाय आत्मा हैं।'

नारद– 'उन कसाई बच्चों की तरह!'

ब्रह्मा– 'जिनके पास सम्यग् (सही) ज्ञान है, वे 'Gyaan' Block के बच्चों की तरह ज्ञान आत्मा हैं। जो बुराईयों से दूर रहकर ऊँचे Character को अपनाते हैं, वे चारित्र आत्मा हैं। अब आप आत्मा को समझ गए होंगे।'

नारद जी– 'Thank You, ब्रह्मा जी।'

तभी नारद जी वहाँ से चलने लगे तो ब्रह्मा जी ने पूछा– 'आप कहाँ जा रहे हो?'

नारद जी– 'G' और 'M' Block में Admission लेने, जिससे मैं भी ज्ञान आत्मा व चारित्र आत्मा बन सकूँ।'

□□□

★★★★★ 15वां बोल – आत्मा आठ ★★★★★

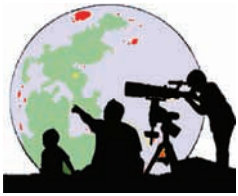

16. इक नई दुनिया

अरिहंत का सपना था कि वह बड़ा होकर ISRO (Indian Space Research Organization) को Join करे। जब से उसने ये जाना था कि Plants में भी Life होती है, तब से उसे ये लगता था कि और जगह भी Life हो सकती है।

अपनी गहरी लगन व मेहनत से अरिहंत का सपना साकार हो गया। ISRO ने उसे 'Study Of Life' का Department सौंप दिया। उसने धरती पर खोज करना शुरू कर दिया।

कुछ ही समय में Micro-Sensors की मदद से अरिहंत ने साबित कर दिया कि– 'Natural Resources में भी Life होती है। ये जीवों की सबसे कम Developed State है। इन जीवों में सिर्फ एक इन्द्रिय (Sense) होती है।'

अरिहंत ने एक कागज़ पर Scale (दण्ड) से ऐसे जीवों के 5 Columns (दण्डक) बना लिए। 1st पृथ्वीकाय (Earth Body) 2nd जलकाय (Water Body) 3rd अग्निकाय (Fire Body) 4th वायुकाय (Air Body) 5th वनस्पतिकाय (Tree, Plants etc.)।

फिर Life की Development के हिसाब से 6th बेइन्द्रिय– दो Senses वाले जीव (समुद्र के किनारे पाए जाने वाले सीप, शंख आदि) 7th तेइन्द्रिय– तीन Senses वाले जीव (धरती पर रेंगने वाले कीड़े-मकौड़े, चींटी आदि) व 8th चतुरिंद्रिय– 4 Senses वाले जीव (उड़ने वाले मक्खी, मच्छर, तितली आदि) के तीन Columns और बनाए।

अब Developed जीवों को खोजना था। उनमें से पशु व मानव जाति सामने ही थी। अतः 9th पंचेंद्रिय तिर्यंच (Animal Life) व 10th मनुष्यों का एक-एक Column बनाया गया।

आगे की Research अंधेरे में तीर चलाने जैसी थी, पर NASA व ISRO के 'चन्द्रमा मिशन' की कामयाबी से अरिहंत बहुत Hopeful था। उसने Super Sensors की Help से कुछ ऐसे U.F.O. (Unidentified Flying Objects) Aliens को Detect किया, जो जंगलों में घूमने आते थे। मनुष्यों से इन Aliens में काफी Difference था, इसलिए उन्हें (11th) व्यंतर (विशेष अंतर) नाम दिया गया।

इस खोज की खुशी में अरिहंत ने मिठाई बाँटी। तभी चन्द्रमा पर लगे Satellite से कुछ Pictures मिली, जिससे ये पता चला कि कुछ चमकीले Aliens वहाँ आते-जाते हैं। अरिहंत खुशी से चिल्लाया– 'Yes, हमने ज्योतिष देव (12th) (चमकने वाले जीव) भी ढूँढ लिए।'

अरिहंत को पक्का विश्वास हो गया कि दुनिया इससे आगे भी है। उसने एक

Special यान तैयार करवाया, जिसे धरती से Charge करके आगे से आगे भेजा जा सके। वह यान चाँद-सूरज-तारों को पार करता हुआ आगे बढ़ा। 6 महीने बाद उसे सफलता मिली। विमान व उनमें रहने वाले सुंदर-सुंदर Aliens की तस्वीरें धरती पर पहुँची।

अरिहंत ने 13th Column वैमानिक देव (विमानों में रहने वाले) का बनाकर कहा– 'आसमान में हमने बहुत कुछ ढूँढ लिया, अब धरती के नीचे खोज करनी होगी।'

अरिहंत की Team ने कहा– 'ज़मीन में Already 12 km तक की खोज हो चुकी है। उससे नीचे हमें क्या मिलेगा?'

अरिहंत– 'कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। जैसे 'Particular Place पर Life है'– यह एक खोज है, ऐसे 'Particular जगह पर Life नहीं है'– यह भी एक खोज होगी।'

इस बात से Team में फिर से जोश पैदा हो गया। उन्होंने एक ऐसा Device तैयार किया, जो Heat-Proof होने से Melt नहीं होगा। यह Device धरती को चीरता हुआ बहुत नीचे तक चला गया। वहाँ से उसने दो तरह के Aliens की तस्वीरें भेजी। पहले Alien बदसूरत, डरावने व देखने में कुछ-कुछ इंसान जैसे थे।

अरिहंत– 'ये नर नहीं (14th) नरक (घटिया नर) रूप हैं।'

दूसरे Aliens सुंदर थे तथा भवनों के स्वामी थे। इनके 10 Different Styles व Symbols (साँप, गरुड, अग्नि आदि) को देखकर Further खोज की दृष्टि से 10 Columns बनाए गए।

अरिहंत इन सब खोजों से बहुत खुश था। उसने एक नए कागज़ पर नीचे से ऊपर तक रहने वाले जीवों के 24 Columns (24 दण्डक) बनाए।

इस खोज से सारा वैज्ञानिक जगत् चकित हो गया। भारतीय सरकार ने अरिहंत को सम्मानित किया।

□□□

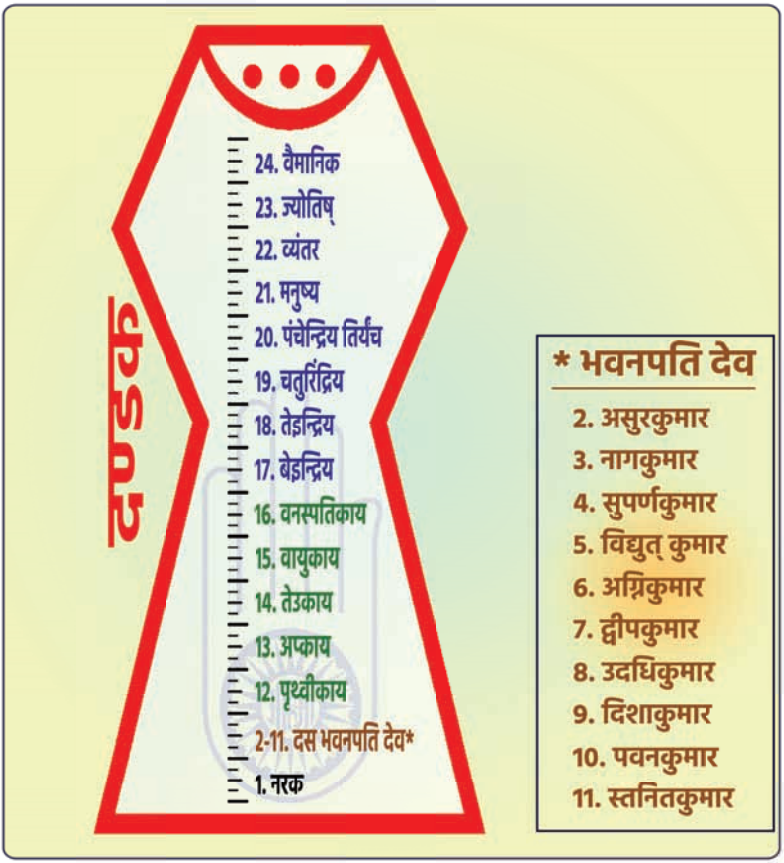

******* 16वां बोल – दण्डक 24 *******

17. परियों की बातें

चिक्की 7 साल की अनाथ बच्ची थी। फुटपाथ ही उसका घर था। एक बार रात को किसी के छूने से उसकी आँखें खुली और उसने देखा– सामने एक लाल परी मुस्कुराकर उससे पूछ रही थी– 'चॉकलेट खाओगी?' चिक्की के 'हाँ' कहने पर परी ने उसे ढेर सारी Chocolates खिलाई और वापिस चली गई।

रोज़ रात को परी नए-नए Gifts लेकर आती। चिक्की घंटों-घंटों उस से परी-लोक के बारे में बातें करती। परी की Politeness व Sweet Nature से चिक्की बहुत प्रभावित थी। वह शाम होते ही परी का इंतज़ार करने लगती थी।

एक रात जब लाल परी आई तो उसकी साँसें फूली हुई थी। उसकी Red Dress पर काले धब्बे (●) लगे हुए थे और वह गुस्से में बड़बड़ा रही थी– 'दुष्ट कहीं का, हमें चैन से जीने भी नहीं देता।'

चिक्की ने आश्चर्य से पूछा– 'आपको क्या हो गया?'

परी– 'हमारे परी-लोक में एक दुष्ट जादूगर 'शातिर' रहता है। वह हमारे पंखों को काटना चाहता है। आज उसी से अपने पंख बचाकर मैं यहाँ तक पहुँची हूँ।' चिक्की ने Notice किया कि जैसे-जैसे लाल परी का गुस्सा शांत हुआ, उसकी Dress से काले धब्बे गायब हो गए। चिक्की को कुछ समझ नहीं आया। उसने परी से इसका कारण पूछा।

परी ने कहा– 'मैं तुम्हें परी-लोक में ले चलती हूँ। इससे तुम्हारी परी-लोक देखने की इच्छा भी पूरी हो जाएगी और प्रश्न का समाधान भी मिल जाएगा।' वे दोनों

परी-लोक में पहुँच गए। वहाँ रंग-बिरंगे कपड़ों वाली परियाँ तितलियों की तरह घूम रही थी। कुछ परियाँ झुण्ड बनाकर चिक्की के साथ खेलने लगी।

तभी एक काली परी वहाँ आई और चिल्लाकर बोली– 'ये क्या शोर मचा रखा है! भागो यहाँ से, नहीं तो तुम सबका मुँह नोच डालूँगी।' लाल परी चिक्की को लेकर जाने लगी तो उन्हें दूर से 'शातिर' दिखाई दिया। उसके कपड़े नीले रंग के थे व हाथ में तलवार थी।

तभी एक Grey (कबूतरी रंग) Dress वाली परी आई और बोली– 'तुम North Direction में चले जाओ, वहाँ सब कुछ Safe है।'

लाल परी ने कहा– 'ठीक है, हम चले जाएँगे।' पर लाल परी चिक्की को दूसरी Direction में ले गई। चिक्की– 'ये सब क्या हो रहा है?'

लाल परी– 'ये सब विचारों का खेल है। मनुष्य जाति की तरह हम परियों के विचार भी अनेक तरह के होते हैं। इन विचारों को लेश्या कहते हैं। इन लेश्याओं से शरीर में Chemicals बनते हैं, Aura (आभामंडल) तैयार होता है।'

चिक्की– 'लेश्या कितनी होती हैं?'

परी– 'तीन शुभ, तीन अशुभ– कुल 6 लेश्याएँ होती हैं। इनके रंग भी अलग-अलग होते हैं। मज़े की बात यह है कि परी-लोक में विचारों के अनुसार Dress का Color भी Change हो जाता है।'

चिक्की– 'इन लेश्याओं के रंग व पहचान क्या है?'

परी– 'पहली कृष्ण-लेश्या (●) है। इसका रंग काला है। इस लेश्या वाले जीव काले कौवे के समान झगड़ालू, गुस्सैल होते हैं।'

चिक्की– 'इसीलिए वो काली परी हम पर चिल्ला रही थी।'

परी– 'हाँ! दूसरी नील लेश्या (●) वाले जीवों में Jealousy होती है। जैसे ज़हर से शरीर नीला पड़ जाता है, ऐसे ईर्ष्या से विचार दूषित हो जाते हैं। 'शातिर' इसी लेश्या के कारण हमारी सुंदरता से जलता है और हमारे पंख काटना चाहता है।'

परी– '3. कापोत लेश्या (●) वाले जीव चालाक होते हैं। ये ऊपर से मीठे बनकर दूसरों को ठगते हैं।'

चिक्की– 'अब मैं समझी कि आपने Grey परी की बात क्यों नहीं मानी!'

परी– 'ये तीनों बुरी लेश्याएँ हैं। 4. तेजो लेश्या (●) अच्छी लेश्याओं में सबसे पहली लेश्या है।'

चिक्की– 'इस लेश्या वाले जीव Polite एवं Co-operative होते हैं।'

परी ने आश्चर्य से पूछा– 'तुम्हें कैसे पता?'

चिक्की– 'आपको देखकर मैंने ये अंदाज़ा लगाया है।'

परी– 'तुम बहुत समझदार हो। 5. पद्म लेश्या (●) वाले जीव शांत होते हैं। पद्म (Lotus) की तरह ये जीव लड़ाई-झगड़े के कीचड़ से दूर रहते हैं। Behavior के साथ इनका Character भी अच्छा व Self-Disciplined होता है।' चिक्की ने देखा कि Yellow परियाँ सचमुच बहुत Sincere व शांत थी।

परी– '6. शुक्ल लेश्या ( ) वाले जीवों के विचार White Color की तरह Pure होते हैं। ये मन से भी किसी का बुरा नहीं सोचते।'

चिक्की– 'मुझे सफ़ेद परी से मिलना है।'

परी– 'वो सामने भगवान् का ध्यान कर रही है।' चिक्की ने जाकर उसे नमस्कार किया तो सफ़ेद परी बोली– 'God Bless You.'

चिक्की ने वापिस आकर लाल परी को कहा– 'अब मुझे आपकी Dress के Black Spots का कारण भी समझ में आ गया। उस समय आप थोड़े गुस्से में थी। धरती पर लौटने से पहले मैं यहाँ से सीख लेकर जाऊँगी कि मुझे अपने विचार शुक्ल लेश्या जैसे बनाने हैं।' परी ने ढेर सारे Gifts देकर चिक्की को विदा किया।

□□□

★★★★★ 17वां बोल – लेश्या छः ★★★★★

18. VISA FROM VISION

सोनू, मोहक व Jonty– तीनों दोस्तों ने विदेशी Company की एक Scheme देखी 'VISA from VISION'। इसमें व्यक्ति के दृष्टिकोण (Vision) के अनुसार VISA दिया जाता था। Company तरह-तरह के Competitions करवाती थी। उसमें जो High Score पाता, उसे उसकी Choice के देश का VISA Free में देती थी।

तीनों दोस्तों ने सोचा– 'हम भी Try कर लेते हैं!' उन्होंने VISA के लिए Form भर दिया। उनका Competition शुरू हो गया। 1st Round था– 'भूलभुलैया'। एक जगह में चारों तरफ एक जैसे 12 दरवाज़े लगे हुए थे। किसी भी दरवाज़े से Enter करने वाला घूम-फिरकर किसी भी दरवाज़े से फिर वहीं पहुँच जाता था।

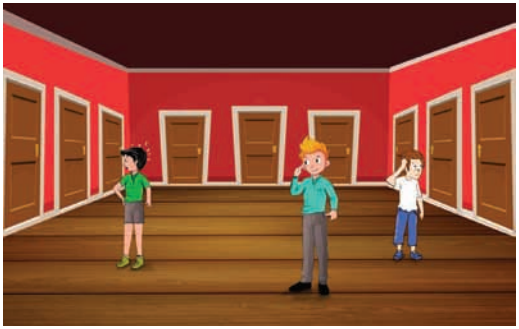

उनमें केवल एक दरवाज़ा ऐसा था, जिसमें Enter करने वाला वापिस उसी से बाहर निकलता था। उस दरवाज़े को Maximum 9 Chances के अंदर ढूँढकर बताना था।

सोनू ने कहा– 'हमें कोई Idea सोचना होगा।' तभी मोहक बोला– 'जितनी देर में तुम Idea सोचोगे, उतनी देर में मैं उस दरवाज़े को ढूँढ भी लूँगा।'

यह कहकर मोहक एक दरवाज़े में घुस गया। Jonty भोला-भाला था। वह भी मोहक के पीछे चल दिया। Idea सोचकर सोनू भी एक दरवाज़े में Enter कर गया। कुछ देर बाद तीनों घूमकर वहीं पहुँच गए और फिर से अलग-अलग दरवाज़ों में Enter कर गए। इस बार Jonty सोनू के पीछे हो गया।

सोनू 7 Chances के बाद रुक गया और बोला– 'मुझे दरवाज़ा मिल गया।' उसे देखकर Jonty भी रुक गया।

अहंकारी मोहक 9 Chances पूरे करने पर बोला–'मुझे भी दरवाज़ा मिल गया।' पर उसने जो दरवाज़ा बताया, वो गलत निकला। उसे 0% Marks मिले।

सोनू ने जिस दरवाज़े को Detect किया, Jonty ने भी वही बताया। उससे पूछा गया– 'तुमने सही दरवाज़ा कैसे ढूँढा?' वह कुछ भी कारण नहीं बता पाया तो उसे केवल 40% Marks मिले।

सोनू ने बताया कि वह जिस भी दरवाज़े से Entry या Exit करता था, वहाँ निशानी के रूप में एक Chit लगा देता था। इससे उसे कामयाबी मिल गई। सोनू को 100% Marks मिले।

2nd round था 'Actual Glass.' दो शीशों में अपनी शक्ल देखकर ये बताना था कि कौन सा शीशा सही है!

Jonty ने दोनों शीशों में शक्ल देखकर कहा– 'दोनों सही हैं।'

मोहक– 'B' शीशा सही है।' सोनू बोला– 'नहीं, 'A' शीशा सही है।'

Judge ने कहा कि सोनू ने बिल्कुल ठीक बताया है। यह सुनकर मोहक चिल्लाया– 'ये Cheating है।'

Judge– 'Cheater तो तुम हो। 'A' शीशे में हू-ब-हू शक्ल दिखती है, जबकि

'B' शीशे में शक्ल 10% ज़्यादा अच्छी दिखाई देती है। तुमने जानबूझकर चालाकी की है। Jonty अपने भोलेपन के कारण इस Difference को समझ नहीं पाया, जबकि सोनू ने ईमानदारी का परिचय दिया है।

3rd Round में 100 Metre दूर तक एक पानी से भरा गिलास लेकर जाना था। मोहक ने फटाफट 15 Minutes में ये काम करके दिखाया। Jonty ने 30 Minutes व सोनू ने 1 घंटे में ये काम पूरा किया। Judge ने फिर से सोनू को Winner घोषित कर दिया। इससे नाराज़ होकर मोहक Judge को उल्टा-सीधा बोलने लगा।

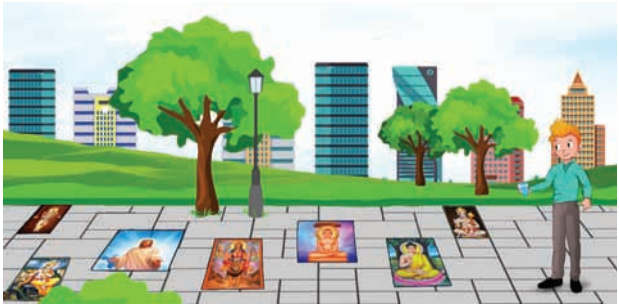

Judge ने उसे शांत करते हुए कहा– 'ध्यान से देखो, इस 100 Metre के रास्ते में अलग-अलग धर्मों के महापुरुषों के चित्र बने हुए हैं। तुम उन चित्रों के ऊपर से दबड़-दबड़ चलते रहे, जब कि सोनू ने इनमें से एक भी चित्र पर पाँव नहीं रखा। Jonty ने सिर्फ अपने धर्म के चित्रों का सम्मान किया, औरों का नहीं।'

Last में तीनों को फैसला सुनाते हुए Judge ने कहा– 'सोनू सम्यग्दृष्टि (Right Vision) वाला सच्चा इंसान है। यह Positive Attitude रखता है व महापुरुषों की Respect करता है। इसलिए यह Free में किसी भी Country का VISA ले सकता है।' सोनू– 'Thank You, Sir.'

Judge– 'मोहक इससे उल्टा यानि मिथ्यादृष्टि (Wrong Vision) वाला है। यह सिर्फ अपना मतलब ढूँढता है। अपनी गलत बात को भी सही मनवाना

चाहता है। ऐसे व्यक्ति को हम किसी अच्छे देश में नहीं भेज सकते। यह चाहे तो Terrorist Countries का VISA ले सकता है।'

सोनू ने Judge से पूछा– 'Jonty की क्या Report है?'

Judge– 'वह मिश्रदृष्टि वाला है। सही व गलत– दोनों की खिचड़ी बना देता है। इसे Confusion में रहने की आदत हो गई है। ऐसे Doubtful Person को हम कहीं का भी VISA नहीं दे सकते।'

सोनू– 'Sir, मैं कोशिश करूँगा कि ये दोनों भी सही दृष्टिकोण को अपनाएँ।'

Judge– 'Best of Luck, Sonu.'

□□□

★★★★★ 18वां बोल – दृष्टि तीन ★★★★★

19. Last Over

दिल्ली के स्कूलों का 20-20 Tournament चल रहा था। दोनों Semi-Final Matches इतने Exciting रहे कि Final की सारी टिकटें दो दिन पहले ही बिक गई। Damodar Public School (D.P.S.) व Yashodhar Public School (Y.P.S.) के बीच Final मुकाबला होना था।

D.P.S. की Team में तीन मुख्य खिलाड़ी थे– Captain धर्म झा, Opener आरव और Fast Bowler रुद्र। धर्म झा Cool Temper वाले थे। उनका Concentration Level इतना अच्छा था कि वे जल्दी से Disturb नहीं होते थे। आरव भरोसेमंद बल्लेबाज़ था। वह सामने वाली Team के छक्के छुड़ा देता था। रुद्र घातक गेंदबाज़ था। उसे देखकर सामने वाले के पसीने छूट जाते थे।

Y.P.S. Team की एकमात्र ताकत थे– Captain शुक्ल। इनकी सोच बिल्कुल Different थी। इनका नज़रिया था– 'हार-जीत खेल का हिस्सा है, एक जीतेगा तो दूसरा हारेगा, पर ये असली हार-जीत नहीं है। असली हार-जीत हमारी Performance पर Depend करती है। अगर हमने 100% Performance दी है, तो हम विजेता हैं। अगर हमारे Efforts में कमी है, तो हम हारे हुए होंगे। इसलिए हमें Last Moment तक प्रयास करना चाहिए।'

शुक्ल अकेला ऐसा खिलाड़ी था, जो बिना Helmet के रुद्र को Face कर सकता था। दर्शक इसे D.P.S. vs Y.P.S. की बजाए 3 vs 1 के रूप में देख रहे थे।

मैच शुरू होने से पहले Practice Session चल रहा था। धर्म झा ने देखा कि आरव Nervous हो रहा है। Final को लेकर उसे Anxiety हो रही थी।

झा– 'आरव, इस समय तुम आर्त्तध्यान (Tension) करोगे तो कैसे चलेगा?'

आरव– 'मैं सोच रहा हूँ कि Luck ने मेरा साथ नहीं दिया तो क्या होगा?'

झा– 'तुम अपना Mind बिल्कुल Relax रखो, ज़्यादा सोचोगे तो अच्छा Perform नहीं कर पाओगे।' झा की बातों से आरव Relax हो गया।

धर्म झा ने रुद्र को विशेष Instruction दी कि– 'तुम खेलते-2 रौद्र-ध्यान (Aggressive Thinking) तक पहुँच जाते हो, जिससे नुकसान ही होता है। इसलिए अपने को Cool रखने की कोशिश करना।'

रुद्र– 'O.K. Sir.'

तालियों की गड़गड़ाहट के साथ Match शुरू हो गया। Toss जीतकर D.P.S. ने पहले Batting की। आरव ने तूफ़ानी पारी खेली, पर 98 Runs बनाकर वह Nervous Nineties का शिकार हो गया। Team ने 20 Overs में 160 Runs बनाए। Y.P.S. को 161 Runs का Target मिला।

Break के बाद Y.P.S. Team की Batting शुरू हुई। रन भी बनते रहे व रुद्र की तूफानी गेंदबाज़ी से Wickets भी गिरते रहे। 19 Overs में 147/9 का Score हो गया। अंतिम 6 गेंदों पर 14 रन बनाने थे।

गेंद रुद्र को सौंपी गई। सामने शुक्ल बिना Helmet के खेलने को तैयार था। शुक्ल के साथी ने कहा कि वो रुद्र का सामना नहीं कर सकता।

शुक्ल ने कहा– 'तुम दौड़ तो सकते हो, बस उसी में मेरा साथ देना।'

Last Over शुरू हो गया। पहली गेंद को शुक्ल ने Boundary पार पहुँचाकर चार रन बनाए। दूसरी गेंद को Left Side में धकेला, पर जान-बूझकर रन नहीं लिया। तीसरी गेंद पर Shot लगाया व दौड़कर दो रन ले लिए। चौथी गेंद पर भी वो दो रन लेना चाहता था, पर रुद्र ने बीच में अड़कर दूसरा रन लेने से रोक दिया।

अब दो गेंदों पर 7 रन बनाने थे। रुद्र की डरावनी हँसी से शुक्ल का साथी घबरा गया। शुक्ल ने उसके लिए बहुत मज़बूत Helmet मंगवाया व उसके कान में कुछ कहा। उधर रुद्र ने सोच लिया कि– 'ऐसी बाउंसर डालूँगा कि ये खेलना भी भूल जाएगा।'

दर्शकों की साँसें रुकी हुई थी। जैसे ही रुद्र ने गेंद डाली, Batsman सिर नीचे करके दौड़ पड़ा। गेंद उसके ऊपर से निकल गई। इतने में शुक्ल ने दौड़कर रन पूरा कर लिया। उसका Plan सफल हो गया।

दर्शक 'शुक्ल' 'शुक्ल' चिल्लाने लगे। इससे रुद्र Upset हो गया। उसने पूरे जोश में अंतिम गेंद डाली, जिस पर शुक्ल ने गगनभेदी छक्का लगाया और Y.P.S. को जीत दिलवा दी।

Loser धर्म झा को छोटी Trophy देते हुए Sponsors ने कहा– 'हम झा के धर्म-ध्यान (Peaceful Thinking) की कद्र करते हैं। पर इनकी Team से व विशेष रूप से आरव और रुद्र से ये आशा करते हैं कि वे अपने Captain जैसी सोच बनाएँगे।'

Captain शुक्ल को बड़ी Trophy देते हुए Sponsors बोले– 'आप के शुक्ल-ध्यान (Deep & Pure Concentration) का कोई मुकाबला नहीं हो सकता।'

शुक्ल– 'Sir, शुक्ल-ध्यान बहुत ही गहरा ध्यान होता है, जो बड़े-बड़े योगियों में ही Possible है, I Am Just The Trailer.'

Sponsor– 'बेशक आप खुद को Trailer कहें, पर Last Moment पर आपने जो Patience दिखाया है, उसे हम नमन करते हैं।' Stadium 15 मिनिट तक तालियों से गूँजता रहा।

□□□

✶✶✶✶✶ 19वां बोल – ध्यान चार ✶✶✶✶✶

20. माँ की दुआ

चिराग बहुत शरारती बच्चा था। एक बार उसने मज़ाक में अपनी मम्मी से कहा– 'मैं Cycle पर पूरी दुनिया घूमना चाहता हूँ।' यह सुनकर उसकी मम्मी की आँखें भर आई।

चिराग– 'अरे, मैं तो ऐसे ही कह रहा था।'

मम्मी बोली– 'बेटा, जब मैं तुम्हारी Age की थी, तब मेरी तीव्र इच्छा थी कि Cycle पर सारी दुनिया घूमूँ। मैंने सारी तैयारी भी कर ली थी, पर मुझे घर से Permission नहीं मिली और मेरी Wish अधूरी रह गई। आज तुम्हारी बात सुनकर मुझे पुरानी बात याद आ गई।

यह सुनकर चिराग Emotional हो गया। उसने मन में ठान लिया कि वह अपने माध्यम से मम्मी की Wish को पूरा करेगा। उसने पूरे Tour की Planning की।

मम्मी– 'मेरी दुआएँ हमेशा तुम्हारे साथ रहेंगी।'

चिराग के पापा बोले– 'बेटा, माँ की दुआएँ तुम्हें आगे बढ़ाएँगी और मैं तुम्हें रोकने का काम करूँगा।'

चिराग ने हैरानी से पूछा– 'रोकने का?'

पापा– 'हाँ, जब चलते-चलते थक जाओ तो Rest कर लेना, कहीं खतरा लगे तो रुक जाना, किसी रास्ते के बारे में Doubt हो तो रुककर पूछ लेना।'

मम्मी-पापा का आशीर्वाद पाकर चिराग की Journey शुरू हो गई। नए देश, नए शहर, नए लोग, नई चीज़ें देखने को मिलती रही। वह Eastern Countries को Cover करते हुए Western Countries में भी घूमा। उसके इस साहसी कार्य का कई जगह Welcome भी किया गया।

जब कभी उसका हौंसला डगमगाता, उसकी आँखों के सामने माँ का चेहरा घूम जाता, जो ये कहता– 'आगे बढ़ो मेरे लाल, आगे बढ़ो।'

इससे चिराग में हिम्मत आ जाती और वह आगे बढ़ने लगता। वह पापा की Instructions भी अच्छे से Follow कर रहा था, जिससे उसे लगता कि

Invisible रूप में मम्मी-पापा उसके साथ हैं।

उसने Statue of Liberty, चीन की दीवार, Eiffel Tower, बुर्ज-ख़लीफ़ा आदि अनेक Famous जगहों को देखा। 10 साल में लगभग 150 देशों का भ्रमण किया। अपने Mission में सफल हो कर जब वह घर लौटा तो उसका Royal Welcome हुआ। मम्मी उसे सीने से लगाकर रो पड़ी।

चिराग कई दिनों तक अपनी यात्रा का वर्णन सुनाता रहा। एक दिन वह अपने Purse से कुछ निकाल रहा था। अचानक Purse में से एक Card निकल कर बाहर गिरा।

मम्मी ने पूछा– 'ये क्या है?'

चिराग– 'ये मुझे Cosmology के एक प्रोफेसर ने दिया था। इसमें हमारे

ब्रह्माण्ड में क्या-क्या है, ये बताया गया है।' मम्मी ने ध्यान से वो Card देखा। उस पर एक Chart बना था।

Cosmos Chart

Substance	Quantity	Place	Duration	Features	Quality
1. धर्मास्तिकाय	Only One	Across World	Eternal	Non-Living & Invisible	Helpful in Movement
2. अधर्मास्तिकाय	Only One	Across World	Eternal	Non-Living & Invisible	Helpful in Stability
3. आकाशास्तिकाय (Space)	Only One	All Over	Eternal	Non-Living & Invisible	Helpful in Accommo-dation
4. काल (Time)	Only One	Across Human World	Eternal	Non-Living & Invisible	Helpful in Change
5. जीवास्तिकाय (Soul)	Infinite	Across World	Eternal	Living & Invisible	Consciousness
6. पुद्गलास्तिकाय (Matter)	Infinite	Across World	Eternal	Non-Living & Visible	Integration & Disintegration

मम्मी– 'तुम्हें ये समझ में आ गया?'

चिराग– 'Space का Column तो Clear है, कि वह सबको जगह देता है। काल(समय) Living व Non-Living चीज़ों के परिवर्तन में Help करता है– ये मैंने साक्षात् देखा है।'

मम्मी– 'वो कैसे?'

चिराग– 'देखो, मैं पहले से कितना Mature हो गया हूँ, और माँ! जो आपने

मुझे खाने के लिए लड्डू दिये थे, वो कुछ तो मैंने खा लिए और कुछ पड़े-पड़े खराब हो गए थे। उनके खराब होने में Time Factor का भी Role है।'

मम्मी– 'क्या सचमुच जीव और पुद्गल Infinite हैं?'

चिराग– 'पूरी दुनिया घूम कर मैंने देख लिया है कि जीवों व वस्तुओं का कोई अंत नहीं है। पर मुझे एक Doubt है। Chart में जीव को Invisible लिखा है, जबकि हम उसे प्रत्यक्ष देखते हैं।'

मम्मी– 'बेटा, Actual में हम Soul को नहीं, Matter से बनी हुई Body को देखते हैं। Body में ही Matter की Quality-Integration (Cells का मिलना) व Disintegration (Cells का खत्म होना)– होती है, Soul में नहीं। वह तो Invisible ही है।'

चिराग– 'Oh! I See. मुझे धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय में भी Doubt है। इन्हें Invisible बताया है, यानि इनमें Color, Shape, Smell, Taste आदि कुछ भी नहीं है, तो ये Movement या Stability में Help कैसे कर सकते हैं?'

चिराग के पापा बोले– 'तुम अपनी विश्व यात्रा में माँ की दुआ व मेरी Instructions का Role मानते हो?'

चिराग– 'Role नहीं, Major Role मानता हूँ।'

पापा– 'क्या ये दोनों Visible हैं?' चिराग– 'नहीं।'

पापा– 'बस ये समझो कि धर्मास्तिकाय एक ऐसी Force है, जो माँ की दुआ की तरह चलने में, गति करने में Helpful है, और अधर्मास्तिकाय मेरी Instructions की तरह रुकने में Help करती है।'

चिराग– 'मैं समझ गया।'

मम्मी– 'एक बात और, आकाश तो सब जगह है, उस आकाश में जहाँ बाकी 5 द्रव्य (Substances) भी होते हैं, उस Portion को हम लोक-संसार-दुनिया आदि नामों से जानते हैं।'

चिराग– 'और उस दुनिया में दो चीज़ें सबसे ज़्यादा Precious हैं– मेरी प्यारी माँ और मेरे प्यारे पापा।'

□□□

★★★★★ 20वां बोल – छः द्रव्यों के 30 भेद ★★★★★

21. ARMY

Captain Rohan बहुत बड़े Army-Officer थे। उनका Field-Work इतना ज़्यादा था कि 10 साल से वे अपने घर भी नहीं जा पाये थे। सरकार ने उनके काम से खुश हो कर उन्हें तीन महीने की छुट्टी दी। वे अपने घर पहुँचे तो सारे मोहल्ले में मिठाई बाँटी गई।

Rohan के Father बलवान सिंह Retired Army-Officer थे। उन्होंने Rohan से पूछा– 'बेटा, भारत के पड़ौसी देश बार-बार War की धमकी देते हैं, क्या भारत उनका मुकाबला कर पाएगा?'

Rohan– 'पापा, हमारा देश अपनी ओर से लड़ाई की शुरुआत नहीं करेगा, पर किसी की बंदर-घुड़की से डरेगा भी नहीं। हमारी Defence Force इतनी Advanced है कि कोई कल्पना भी नहीं कर सकता।'

पापा– 'वो कैसे?' Rohan– 'ये सब Secret है, पर आप जैसे देशभक्त को बताने की हमें Permission है। सुनिए– पूरी दुनिया में दो Group (राशि) हैं– Living (जीव राशि) व Non-Living (अजीव राशि)। ज़्यादातर देशों का Focus अजीव पदार्थों यानि Atomic Energy पर है, पर हमारे देश ने Living Army पर भी Focus किया है।'

बलवान सिंह– 'Good.' Rohan– 'Living Army के हर Division में दो तरह के सैनिक हैं– Trained व Under Training. इनके Code Word हैं– पर्याप्त (Trained) व अपर्याप्त (Under Training- U.T.)। हमारी पूरी Force

चार हिस्सों में बँटी हुई है।' पापा– 'कौन से हिस्से?'

Rohan– 'पहला है DEV. ये Super Air-Force है। इसमें 99 कमांडो Fully Trained हैं और इतने ही U.T. हैं, कुल 198 तरह की Force है।'

'दूसरी MAANAV नाम की स्थल सेना है, ये 101 जगहों पर फैली हुई है। सभी जगह Trained (101) व U.T. (101) सैनिक हैं।'

'इन 101 Centres पर ऐसे भी लोग हैं, जो Army में शामिल होने के लिए आते हैं, पर अयोग्य होने से Reject कर दिये जाते हैं। फिर भी उन सब का हौंसला बढ़ाने के लिए हम 303 (101+101 U.T. + 101 Rejected) तरह की Force मानते हैं।'

पापा– 'ये बहुत अच्छा किया। इससे सभी को देश-सेवा की प्रेरणा मिलेगी।'

Rohan– 'तीसरी Force है ANIMAL. भगवान् श्रीराम की वानर-सेना की Theme पर ये Force तैयार की गई है। हाथी, घोड़े, मगरमच्छ, उल्लू आदि जीवों से लेकर टिड्डी दल, कीड़ी-मकोड़े आदि प्रत्येक जीव को ऐसे तैयार किया जा रहा है कि ज़रूरत पड़ने पर इनकी मदद ली जा सके। इनके 24 Types Trained व 24 U.T. = कुल 48 Categories हैं।'

पापा– 'Amazing.' Rohan– 'चौथी Force NARAK इससे भी Unique है। ज़मीन के नीचे उसके 7 Training Centres हैं। इनमें सैनिकों को 1st Degree से लेकर 7th

Degree तक के Torture को झेलना सिखाया जाता है। यहाँ 7 Trained व 7 U.T. = कुल 14 Forces हैं। सब मिलाकर 198+303+48+14 = 563 तरह की Living Force है।'

पापा– 'ऐसा लगता है कि हमारी Army ने पूरी दुनिया को मुट्ठी में बंद कर लिया है। Living Force इतनी Unique है तो Non-Living Force भी Unique होगी।'

Rohan– 'Non-Living Force बस तीन कदम पीछे है, यानि जीव 563 हैं तो अजीव 560 (563-3) हैं। इसके दो हिस्से हैं– Visible & Invisible.

पापा– 'Invisible!' Rohan– 'हाँ! वैसे तो Time, Space जैसी Invisible (अरूपी) ताकतें Neutral रहती हैं, पर हम इन्हें 30 तरीकों से अपने लिए Helpful बना लेते हैं। हमारी Visible (रूपी) Force 21वीं सदी का बहुत बड़ा चमत्कार है, जो Terrorism को खत्म करने में Capable है। इस Force की 5 Categories हैं– A.S., S.S, T.P, T.M.N & B.C.'

पापा– 'ये Force है या पहेली?'

Rohan– 'मैं इस पहेली को Solve करता हूँ। A.S. का मतलब है Attacking Shapes (संस्थान)– इसमें 5 Different Shapes वाली 100 Missiles हैं, जिन्हें देखते ही शत्रु भाग जाएगा। S.S. का मतलब है Sleeping Smell– सुगंध व दुर्गंध वाले 46 तरह के गैस के गोले हैं, जिन्हें सूंघते ही शत्रु बेहोश हो जाएगा।' पापा– 'Wow!'

T.M.N

Rohan– 'T.P. मतलब Tasty Poison– 5 प्रकार के Taste (रस) वाली 100 तरह की Tablets हैं, जिन्हें जीभ पर रखते ही शत्रु खत्म। T.M.N. यानि Touch Me Not– 8 प्रकार के

Touch (स्पर्श) वाले 184 ऐसे Toys हैं, जिन्हें छूते ही विस्फोट हो जाएगा। B.C. Means Blinding Colors (वर्ण)– 5 रंगों के ऐसे 100 चश्में हैं, जिन्हें लगाते ही शत्रु को दिखना बंद हो जाएगा। इस तरह 530 (100+46+100+184+100) प्रकार की Non-Living Visible Force है।'

पापा– 'बेटा, मैं इस Force को प्रणाम करता हूँ। भारत माता की जय हो।'

Rohan– 'पापा, हम मानवता को आतंकवाद से बचाकर रहेंगे। हमारा Motto यही है– **ना जुल्म करेंगे, ना जुल्म सहेंगे।**'

□□□

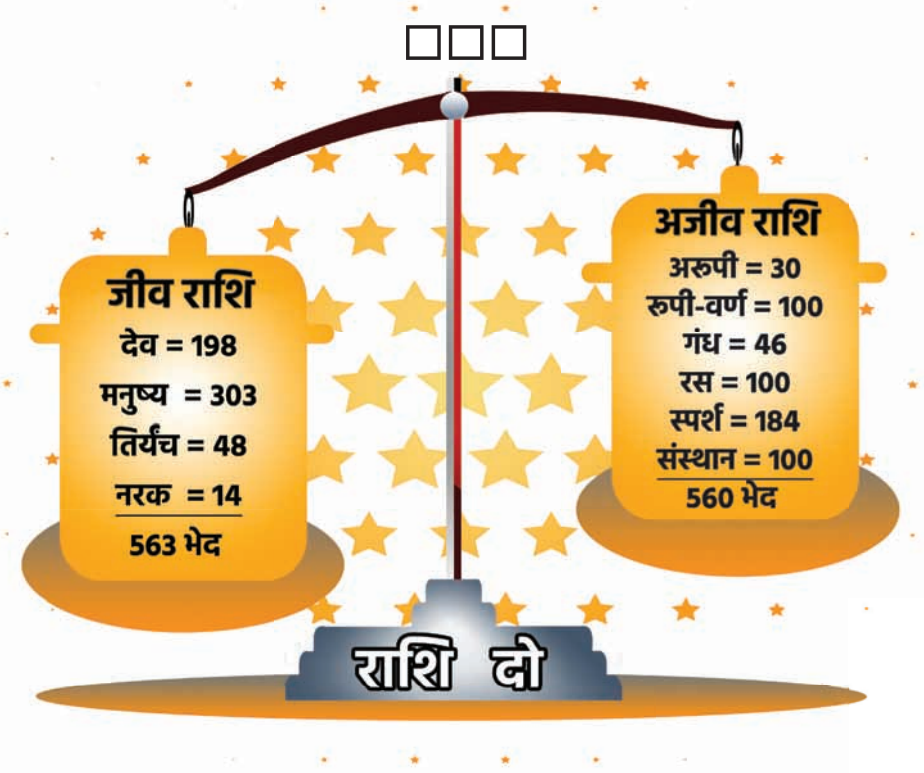

★★★★★ 21वां बोल – राशि दो ★★★★★

22. PERSONAL EXPERIENCE

अर्जुन कुमार, जिन्हें 'Best Citizen' का Award मिला था, उन्हें एक School में Counselling के लिए बुलाया गया।

बच्चों ने उनसे पूछा– 'आप इतने ऊँचे पद तक कैसे पहुँचे?'

अर्जुन– 'आज मैं जो कुछ भी हूँ, अपने Teacher 'श्रावक जी' की वजह से हूँ। वो नहीं होते तो मैं चोर या बदमाश होता।' बच्चे हैरानी से अर्जुन की ओर देखने लगे।

अर्जुन– 'मैं अपनी कुछ Personal बातें आपसे Share करूँगा, उससे आप समझ जाओगे।

'श्रावक जी' ने मुझ में पाँच तरह के संस्कार डाले हैं–

1. अहिंसा– 'मैं बचपन में बहुत Hyper था। किसी भी बच्चे को पीट देता। एक दिन Class में किसी बच्चे ने पटाखा चला दिया। 'श्रावक जी' Class में आए और मुझे पीटना शुरू कर दिया।

मैंने कहा कि– 'मैं निर्दोष हूँ, मुझे क्यों मारते हो?'

तब 'श्रावक जी' बोले– 'तुम भी निर्दोष व दोषी में फ़र्क समझते हो?' उनकी ये बात मेरे दिल को इतनी लगी कि मैंने संकल्प कर लिया कि किसी भी निर्दोष प्राणी को नहीं मारूँगा।'

2. सत्य– 'मैं बच्चों की झूठी शिकायतें लगाकर उन्हें फँसा देता था।

Exams के दिनों में 'श्रावक जी' ने मुझे दो Pen देकर कहा– 'इनका Flow

बहुत अच्छा है, तुम इनसे Paper करना।' मैंने उनकी बात मानी, पर वो दोनों Pen खराब निकले। मेरा Paper तो खराब हुआ, पर उनके झूठ ने मुझे सबक सिखा दिया। मैंने कसम खाई कि झूठ बोलकर किसी को धोखा नहीं दूँगा।'

3. अचौर्य– (चोरी न करना)– 'एक बार मैंने एक बच्चे का Geometry Box चुरा लिया।

उस बच्चे ने 'श्रावक जी' को Complaint की, पर वो चुप रहे। मैंने सोचा कि मैं बच गया, पर अगले दिन मेरा Lunch Box और Water Bottle गायब हो गए। इस 'Tit For Tat' के बाद मैंने कभी चोरी नहीं की।'

4. ब्रह्मचर्य– (मन को पवित्र बनाना)– 'हम लड़के आती-जाती लड़कियों को घूर-घूर कर देखते थे। एक दिन 'श्रावक जी' मुझे School के Gate पर ले गए। मैंने देखा कि कुछ बदमाश लड़के मेरी छोटी बहन को घूर रहे थे।

मैं उनसे लड़ने के लिए जाने लगा तो 'श्रावक जी' बोले– 'पहले अपने आप को सुधारो। तुम जिन्हें घूरते हो, क्या वे किसी की बहन नहीं हैं?' मैंने तभी ठान लिया कि किसी को बुरी निगाह से नहीं देखूँगा। शादी के बाद भी मैंने हमेशा पराई स्त्री को बहन समझा है।'

5. अपरिग्रह– (ज़्यादा लालच नहीं करना)– 'एक बार मैंने 'श्रावक जी' से पूछा कि– 'आप Free Tuition क्यों पढ़ाते हो?'

वे बोले– 'मेरा गुज़ारा अच्छा चल रहा है, फिर ज़्यादा लालच क्यों करूँ!' उनकी इस बात से प्रभावित होकर मैंने सोच लिया कि आवश्यकता से ज़्यादा धन आदि का संग्रह नहीं करूँगा।'

अर्जुन– 'ये पाँच अणुव्रत (छोटे नियम) मेरे जीवन की Foundation है।' बच्चों ने खूब Clapping की।

एक बच्चे ने पूछा– 'हम पढ़ाई में कैसे सफल हो सकते हैं?'

अर्जुन– 'श्रावक जी' कहते थे कि तीन गुणों को अपनाने से जीवन के हर Field में सफलता मिल सकती है।

वे गुण हैं– (I) दिशा परिमाण (Limitation of Travelling) (II) उपभोग-परिमाण (Limitation of Daily-Use Items) (III) अनर्थदण्ड-विरमण (Avoidance of Unnecessary Deeds)'

बच्चे– 'इसमें आपका कोई Experience है?'

अर्जुन– 'हाँ, मुझे खुद घूमने-फिरने, खाने-पीने व इधर-उधर की खबरें इकट्ठा करने का शौक था। एक बार 'श्रावक जी' ने मुझे एक साल की खुली छूट दे दी कि जो करना है, करो।

बच्चे– 'फिर आपने क्या किया?'

अर्जुन– 'मैं दो बार Foreign Tour पर गया। हर रोज़ Fast Food खाता, Latest Fashion की चीज़ें खरीदता। उस साल मैंने 100 Movies देखी। पर जब Exams सिर पर आए तो मेरी साँसें फूल गई और मैं Fail हो गया। तब मैंने 'श्रावक जी' के तीन गुणों को अपनाया। उसके बाद मैं हर साल Class में First आने लगा।'

एक बच्चे ने पूछा– 'Sir, मन को Relax करने का तरीका क्या है?'

अर्जुन– 'इसके लिए 'श्रावक जी' की चार शिक्षाएँ (प्रयोग) बहुत कारगर हैं:–
(A) एक दिन मेरा किसी से झगड़ा हो गया। मेरा मन बहुत अशांत था।

'श्रावक जी' ने कहा– 'तुम एक तरफ आँखे बंद कर के बैठ जाओ और तब तक नहीं उठना, जब तक मन शांत न हो। 48 Minutes में जा कर मेरा मन शांत हुआ। ये प्रयोग मैं आज भी करता हूँ। इसका नाम है सामायिक।'

(B) 'श्रावक जी' कभी-कभी हमें Camp Life का अभ्यास करवाते थे। खुले वातावरण में ध्यान शिविर, योग शिविर लगवाते। योगी-महात्माओं की तरह रहकर हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता। यह देशावकाशिक (देश अवकाश-आंशिक छुट्टी) प्रयोग है।'

(C) 'श्रावक जी' कभी-कभी हमें उपवास (Fasting) करवा कर प्रार्थना व धर्मग्रंथों का पाठ करवाते थे। शुरू में हमें ये अटपटा लगा। पर धीरे-धीरे हमने ये Feel किया कि इस प्रयोग से हमारी Energy कई गुणा बढ़ जाती थी। यह पौषध नाम का प्रयोग था।'

(D) चौथा प्रयोग है अतिथि संविभाग– अतिथियों की सेवा करना।

'श्रावक जी' कहते थे– 'आने वाला अतिथि भगवान् का रूप होता है। उसकी सेवा करने से खुशी व आशीर्वाद– दोनों मिलते हैं।'

एक बार हमारे School में एक आचार्य जी आए थे, तब 'श्रावक जी' ने खुद उनकी सेवा की। मुझे भी इस प्रयोग से बहुत आनंद मिलता है।'

अर्जुन कुमार की बातों से बच्चे भाव-विभोर होकर बोले– 'Sir, हम भी 'श्रावक जी' के 5 अणुव्रत, 3 गुणव्रत व 4 शिक्षा-व्रत जीवन में अपनाएँगे।'

अर्जुन– 'फिर तो आप भी **'श्रावक जी'** बन जाएँगे, क्योंकि श्रावक शब्द का

अर्थ है– 'अच्छी बातें सुनकर उन्हें जीवन में उतारने वाला।' पूरी Class तालियों से गूँज उठी।

□□□

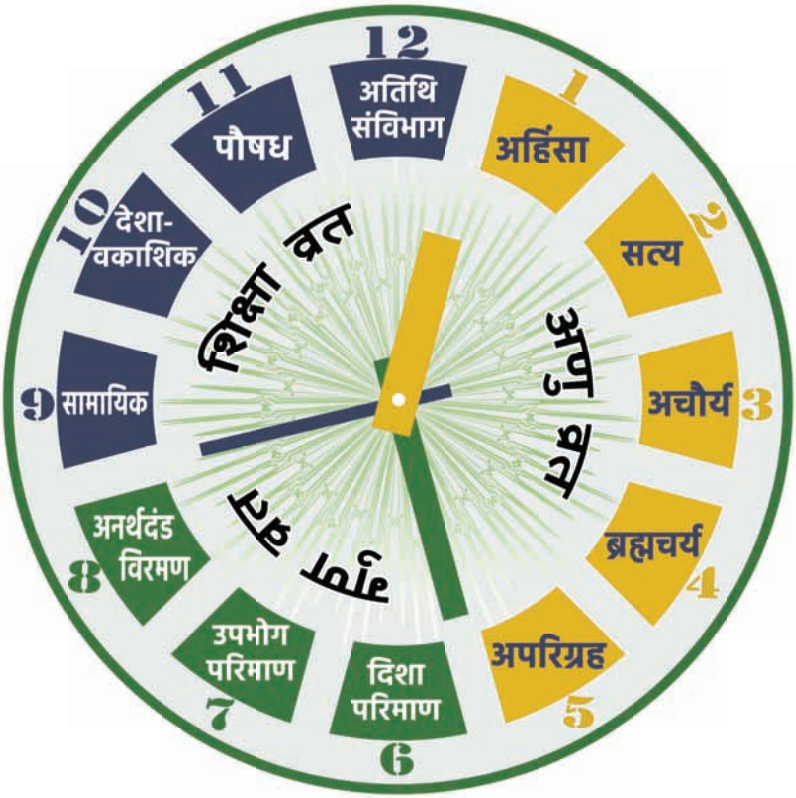

★★★★★ 22वां बोल – श्रावक के 12 व्रत ★★★★★

23. EIGHTH WONDER

अरावली की पहाड़ियों में डाकू खड्ग सिंह अपने साथियों के साथ रहता था। वह रास्ते में यात्रियों को लूटता था। एक बार उसने दूर से दो साधुओं को जाते हुए देखा। उनके सफेद कपड़ों को देखकर उसने सोचा– 'ये Arab Country के शेख हैं, इनके पास बहुत पैसा होता है। पर इनके कंधों पर यह डंडी व धागों वाली क्या चीज़ है? ज़रूर ये इनका कोई हथियार होगा!'

खड्ग सिंह ने चुपके से साधुओं पर हमला कर दिया और बंदूक दिखाते हुए कहा– 'जो कुछ भी तुम्हारे पास है, हमारे हवाले कर दो।'

एक साधु ने कहा– 'हमारा माल बहुत कीमती है, तुम ले नहीं पाओगे!'

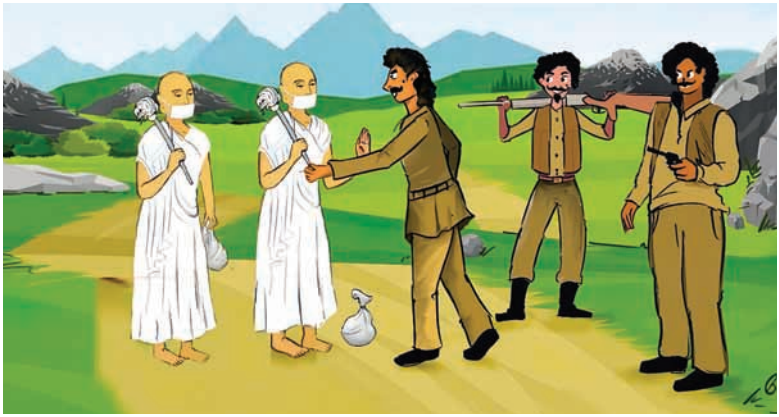

खड्ग सिंह– 'अच्छा, अभी लेकर दिखाता हूँ।' उसने साधुओं के हाथ से पोटली छीन ली और उसे खोल कर देखा। उसमें छोटे-छोटे बर्तन थे।

साधु– 'ये लकड़ी के पात्र (बर्तन) हैं, इनमें हम भोजन करते हैं।'

खड्ग सिंह– 'तुम झूठ बोलते हो। ज़रूर ये पात्र कीमती धातु के बने होंगे!'

साधु– 'हम तो मज़ाक में भी झूठ नहीं बोलते। सत्य हमें प्राणों से भी प्यारा है।' खड्ग सिंह को साधु की बात का विश्वास नहीं हुआ। उसने एक पात्र को ज़ोर से ज़मीन पर पटका। पात्र चकनाचूर हो गया। वो लकड़ी का ही था।

खड्ग सिंह साधु की सच्चाई से बहुत प्रभावित हुआ। उसने डंडी के बारे में पूछा– 'यह कौन सा हथियार है?'

साधु– 'यह हथियार नहीं, रजोहरण है। यह जीव-रक्षा का साधन है। रास्ते में या बैठने के स्थान पर चींटी आदि जीव आ जाएँ, तो उन्हें हम रजोहरण के कोमल धागों से एक Side में कर देते हैं, जिससे उन जीवों को कष्ट न हो।'

खड्ग सिंह ने आश्चर्य से पूछा– 'इतने छोटे जीवों की रक्षा!'

साधु– 'क्या उनमें प्राण नहीं हैं! हमारे गुरुजी ने सबसे पहले अहिंसा का पाठ पढ़ाया है कि– 'किसी भी प्राणी का बुरा न करना है, न बोलना है, न सोचना है। 'जीओ और जीने दो'– हमारा मुख्य नियम है।'

खड्ग सिंह प्रभावित होकर साधु को प्रणाम करने लगा। तभी उसका साथी गब्बर सिंह उसे एक तरफ ले गया और बोला– 'ये ढोंगी हैं या सच्चे साधु?'– इसका पता मैं एक रात में लगा लूँगा, तुम इन्हें अपनी बस्ती में ठहरा लो।'

खड्ग सिंह को यह सुझाव पसंद आया। उसने साधुओं को एक कमरे में ठहरा दिया। कमरे के बाहर कुछ गत्ते के Boxes रखे थे। एक साधु ने खड्ग सिंह से पूछा– 'आपकी इजाज़त हो तो हम उन्हें Use कर लें!'

खड्ग सिंह– 'इतनी छोटी चीज़ के लिए पूछने की क्या ज़रूरत है?'

साधु– 'बिना Permission के किसी की चीज़ लेना गलत है। यह चोरी भी है, असभ्यता भी। छोटी चीज़ उठाना छोटी चोरी है, बड़ी चीज़ उठाना बड़ी चोरी। हम दोनों चोरियों से दूर रहते हैं। इस अचौर्य (चोरी न करना) की Quality से ही जीवन महान् बनता है।'

गब्बर सिंह यह सब सुन रहा था, पर वह रात के इंतज़ार में था। देर रात को वह औरत का वेष बनाकर साधुओं के पास पहुँचा और बोला– 'मुझे खड्ग सिंह ने आपकी सेवा में भेजा है।'

साधु– 'हमारे ब्रह्मचर्य व्रत की मर्यादा है कि शादी करवाना तो दूर, हम नारी को छूते तक नहीं, इसलिए तुम यहाँ से बाहर जाओ।'

उस नकली औरत ने वहीं रुकने की ज़िद्द की, तो दोनों साधु अपना सामान वहीं छोड़कर कमरे से बाहर आ गए व पेड़ के नीचे बैठ गए। पीछे से गब्बर ने साधुओं के सामान की तलाशी ली। उसे वस्त्र व पुस्तकों के अलावा कुछ नहीं मिला।

अगले दिन सुबह सब डाकू इकट्ठे हो गए। गब्बर सिंह ने साधुओं से माफ़ी माँगते हुए सबके सामने कहा– 'इन साधुओं के पास परिग्रह (धन) नाम की कोई चीज़ नहीं है। ये पैसे के चक्कर से दूर रह कर भगवान् की भक्ति करते हैं। हम पैसे

के पीछे भागने वाले लोग हैं। इनके इस अपरिग्रह (धन-संपत्ति न रखना) गुण के बारे में हम सोच भी नहीं सकते।'

खड्ग सिंह ने कहा– 'इन साधुओं के पाँचों महाव्रत (बड़े-बड़े नियम) एक से बढ़कर एक हैं। They Are The Eighth Wonder Of The World. हम इनका यह कीमती माल (5 महाव्रत) तो नहीं ले सकते, पर आज मैं इनके चरण छूकर यह सौगंध लेता हूँ कि आज के बाद किसी को नहीं लूटूँगा।'

सभी डाकू मिलकर एक स्वर में बोले– 'हम भी डाका नहीं डालेंगे।' उन सभी को आशीर्वाद देकर साधु आगे चले गए।

□□□

★★★★★ 23वां बोल – साधुजी के पाँच महाव्रत ★★★★★

24. कौन बनेगा छोटा MILLIONAIRE

K.B.C. (कौन बनेगा करोड़पति) की Theme पर Mr. Khyan ने बच्चों के लिए K.B.C.M. (कौन बनेगा छोटा Millionaire) शुरू किया। इसके Rules थोड़े Different थेः–

1. एक साथ तीन बच्चे Participate कर सकते हैं ।

2. उनसे 5 Questions पूछे जाएँगे, वे सलाह करके Answer दे सकते हैं।

3. अगर सभी Answers ठीक हुए तो वे Mega Round में पहुँच जाएँगे। उसमें एक बड़ी Puzzle Solve करनी होगी।

4. अगर 5 में से कोई भी Answer गलत हुआ, तो दर्शकों के Answers देखे जाएँगे। जिसके सारे Answers ठीक हुए, वह Mega Round में खेल सकेगा।

5. हर Question के चार-चार Options होंगे, Life-Line कोई नहीं।

Contest शुरू हो गया। Host की सीट पर Mr. Khyan बैठे थे। उनके सामने अयान, सुहानी व विहान– तीन बच्चे बैठे थे। Mr. Khyan ने 5 सवाल पूछे।

Q1. ऐसी Photo, जो भारत के हर घर में मिलती है–

(A) श्री कृष्ण (B) महावीर (C) महात्मा गांधी (D) नरेंद्र मोदी

Q2. ऐसा क्या है, जो ऊपर जाने पर नीचे नहीं आता–

(A) Kite (B) Height (C) Flight (D) Nightingale

Q3. 12th की सही Spelling क्या है–

(A) Twelfth (B) Twelth (C) Twelveth (D) Tweleth

Q4. It Starts With 'T', Ends With 'T' And Full Of 'T'–

(A) Tattoo (B) Tent (C) Toast (D) Teapot

Q5. – राजू ने ₹10 में एक Chocolate खरीदकर ₹11 में बेची, फिर दोबारा उसी व्यक्ति से ₹12 देकर वो Chocolate वापिस ली और किसी और को ₹13 में बेच दी। राजू को इसका क्या Result मिलेगा?

(A) ₹2 Profit (B) ₹1 Profit (C) ₹1 Loss (D) No Profit, No Loss

तीनों बच्चों ने सलाह करके Answers Click किए– 1. महात्मा गांधी 2. Height 3. Twelth 4. Teapot 5. No Profit, No Loss.

Mr. Khyan बोले– 'Sorry, आपका 3rd व 5th Answer गलत है।' तीनों बच्चे निराश होकर दर्शकों के बीच जाकर बैठ गए। फिर दर्शकों के Answers देखे गए। सिर्फ एक लड़की के सभी Answers सही मिले। 3rd का Answer– Twelfth व 5th का– ₹2 Profit था। उस लड़की को Hot Seat पर बैठाया गया।

Khyan– 'Welcome. What's your Good Name?'

लड़की– 'My name is Pratya.'

Khyan– 'प्रत्या, हम Mega Round शुरू करने जा रहे हैं, ध्यान से सुनना– Video Game की दो बड़ी Companies हैं– Yog व Karan. योग के पास तीन बड़े Characters हैं– मन्वी, वाणी व तन्वी। मन्वी का काम है सिर्फ़ सोचना, वाणी का काम है बोलना और तन्वी का काम है– शरीर को हिलाना।'

'करण के पास भी तीन Characters हैं–

1.Candoo– ये हर कार्य को खुद करता है।

2. Dependoo– ये हर काम औरों से करवाता है।

3. Andoo– ये औरों के काम को Appreciate करता है।'

'दोनों Companies ने मिलकर Agreement किया कि आगे से जो भी Game बनाएँगे, उसमें दोनों के Characters का Role होगा। जैसे मन्वी व Candoo

को जोड़कर जो Game बनेगी, उसमें Candoo की ताकत मन्वी में Transfer हो जाएगी। फिर मन्वी मन से सोचकर ही सब काम कर डालेगी।'

Mr. Khyan– 'Pratya, अब आपको इन दोनों Companies की Help करनी है। हमारा 1st Question है– अगर दोनों Companies के एक-एक Character को लें तो कितनी तरह की Games बन सकती हैं–
(A) 3 (B) 6 (C) 9 (D) 1

प्रत्या– '9'.

Khyan– 'वो कैसे?'

प्रत्या– '1. Y_1K_1 (मन से करने वाला) 2. Y_1K_2 (मन से करवाने वाला) 3. Y_1K_3 मन से अनुमोदन (Appreciate) करने वाला।

4. Y_2K_1 (वाणी से करना) 5. Y_2K_2 (वाणी से करवाना) 6. Y_2K_3 (वाणी से अनुमोदन करना)

7. Y_3K_1 (शरीर से करना) 8. Y_3K_2 (शरीर से करवाना) 9. Y_3K_3 (शरीर से अनुमोदन करना)'

Khyan– 'Right. अब Questions की Series आपके सामने है। आप उनके Answers व एक-एक Example लिखते जाइए। चारों Options वही रहेंगे।'

Q2. योग का एक व करण के दो Characters को लें तो कितनी Games बन सकती हैं।

प्रत्या– '9. (e.g. $Y_2K_1K_2$) यानि वाणी से करना व करवाना'

Khyan **Pratya**

Q3. योग-1, करण-3 = 3 Options (e.g.– $Y_2K_1K_2K_3$)

Q4. योग-2, करण-1 = 9 Options (e.g.– $Y_1Y_3K_1$)

Q5. योग-2, करण-2 = 9 Options (e.g.– $Y_2Y_3K_1K_2$)

Q6. योग-2, करण-3 = 3 Options (e.g.– $Y_1Y_3K_1K_2K_3$)

Q7. योग-3, करण-1 = 3 Options (e.g.– $Y_1Y_2Y_3K_1$)

Q8. योग-3, करण-2 = 3 Options (e.g.– $Y_1Y_2Y_3K_2K_3$)

Q9. योग-3, करण-3 = 1 Option (e.g.– $Y_1Y_2Y_3K_1K_2K_3$)

Khyan– 'Absolutely Right.' अब Last Question– अगर हमने हर Option की एक-एक Game बना ली और By Chance दोनों Companies इन सबको Dissolve करना चाहें तो उन्हें कितनी Games Dissolve (भंग) करनी होंगी–

(A) 55 (B) 43 (C) 49 (D) 71

प्रत्या– 'Simple. 49 तरह की Games हैं तो उतनी ही, यानि 49 Games Dissolve (भंग) करनी होंगी।'

Khyan– 'Correct. You Have Won.' Khyan ने One Million का Cheque प्रत्या को सौंप दिया।

दर्शक खुशी से चिल्लाने लगे– 'प्रत्या-ख्यान', 'प्रत्या-ख्यान'।

प्रत्या ने खड़े होकर कहा– 'इस Video Game की पहेली को जीवन में भी

उतारा जा सकता है। क्योंकि प्रत्याख्यान का मतलब है– Promise करना। हम 49 तरीके से अच्छे काम करने का संकल्प कर सकते हैं और 49 तरीके से ही बुरे कामों को छोड़ भी सकते हैं।'

सब बच्चे बोले– 'We Will Try Our Best.'

□□□

★★★★★ 24वां बोल–प्रत्याख्यान के 49 भंग ★★★★★

25. गंगा मैय्या

Russia के P.M. भारत में घूमने आए। भारत के P.M. ने उनका Royal Welcome किया। Russian P.M. बोले– 'मैंने बचपन में गंगा नदी के बारे में सुना था कि उसका पानी बहुत पवित्र है। मैं उसे देखना चाहता हूँ। मैंने Search कर लिया है, Nearest गंगा नदी हरिद्वार में बहती है, चलो वहीं चलते हैं।'

भारतीय P.M. बोले– 'हम कहीं और चलते हैं।'

Russian P.M.– 'मुझे हरिद्वार ही जाना है।' आखिर वे हरिद्वार के घाट पर पहुँचे। वहाँ की गंदगी व Smell से Russian P.M. का सिर चकरा गया। वे बोले– 'Shame on You & Your Country.'

इन तीखे शब्दों से भारत के P.M. को बहुत दुख हुआ। उन्होंने अपने P.A. चारित्र 'बिट्टू' को कहा– '6 महीने बाद ये फिर से भारत आएँगे, तब तक यहाँ की पूरी सफ़ाई हो जानी चाहिए। तुम 6 महीने तक यहीं रुकोगे।'

बिट्टू समझ गया कि मामला Serious है। उसने हरिद्वार के सब घाटों पर बोर्ड लगवा दिये– SAM (Safai Abhiyan of Maiya)। साथ में आदेश भी जारी कर दिया कि आज के बाद गंगा में Plastic की थैलियाँ, कूड़ा, पूजा-सामग्री आदि कुछ भी डालने पर Ban है। नए कचरे की No Entry के बाद पुराने कचरे

को साफ़ करने का काम भी शुरू हो गया।

कुछ दिनों बाद बिट्टू को Report मिली कि कुछ घाटों पर सफ़ाई अभियान अच्छा चल रहा है, पर कुछ घाटों पर लोग अभी भी कचरा डाल रहे हैं। ऐसे लोगों का इलाज करने के लिए बिट्टू ने वहाँ एक नया बोर्ड लगवा दिया– 'छेद'। उसके नीचे लिखवा दिया कि 'जो गंगा में कचरा डालेगा, उसकी Shirt में छेद कर दिया जाएगा।'

'छेद' नियम सख्ती से लागू किया गया। इससे नया कचरा डलना तो बंद हो गया, पर कुछ स्थानों पर कचरा इतना ज़्यादा था कि उसे साफ़ करने में छः महीने कम थे। बिट्टू ने वहाँ के लोगों को Motivate करते हुए कहा– 'गंगा हमारी माँ है, इसकी सफाई में कौन हमें सहयोग देगा?'

9 लोग आगे आकर बोले– 'हम तैयार हैं।'

बिट्टू ने उन 9 लोगों की Team तैयार की, जो गंगा की विशुद्धि के लिए सब काम छोड़कर (परिहार करके) अपना योगदान देंगे। इस 'परिहार विशुद्धि' Team के आने से सफाई अभियान में तेज़ी आ गई।

6 महीने बीत गए। Russian P.M. के आने से एक दिन पहले भारत के P.M. वहाँ पहुँचे। सभी जगह Work Condition पर लिखा था– 'SAM प्रायः।' बिट्टू ने बताया– 'Sir, प्रायः का मतलब है लगभग, यानि हमारा SAM Mission लगभग Complete है। ज़रा सा (सूक्ष्म सा) बाकी है, रात तक वो भी Finish हो जाएगा।'

अगले दिन Russian P.M. भारत में आए। उन्हें सबसे पहले हरिद्वार में ही लाया गया। गंगा का Crystal Clear पानी देखकर वे चौंके– 'मैं सपना तो नहीं देख रहा!'

बिट्टू ने Screen पर Project Work दिखाते हुए कहा– 'Sir, गंगा का पानी यथाख्यात (जैसा आपको बताया गया था) यानि बिल्कुल शुद्ध हो चुका है।'

Russia के P.M. खुश होकर बोले– 'इस Project का सारा खर्च हम देंगे। इसके साथ मैंने Last Time जो शब्द कहे थे, उन्हें मैं वापिस लेता हूँ।'

भारत के P.M. ने पूछा– 'अरे बिट्टू, तू इतना होशियार कब से हो गया?'

बिट्टू– 'ये गुरुओं की कृपा है।' दोनों P.M. हैरानी से बोले– 'गुरुओं की?'

बिट्टू– 'हाँ, एक बार हमारे गाँव में संघ-शास्ता गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. एवं उनके शिष्य शास्त्री श्री पद्म चन्द्र जी म. आए थे। उन्होंने मुझसे मेरा नाम पूछा।' मैंने कहा– 'घर का नाम बिट्टू है व स्कूल का नाम चारित्र।' उन्होंने मुझसे चारित्र का मतलब पूछा तो मैंने कहा– 'आप ही बताओ।'

वे बोले– 'मनुष्य की ज़िंदगी गंगा के पानी के समान है, जो बुराइयों की गंदगी से भरी हुई है। इसे शुद्ध करने की विधि का नाम चारित्र है।'

मैंने पूछा– 'वह विधि कौन सी है?'

वे बोले– 'सबसे पहले 'मैं किसी नई बुराई को जीवन में नहीं आने दूँगा'– यह संकल्प किया जाता है। इस विधि का नाम– सामायिक (Samayik) है।'

'इस विधि में अगर ये लगे की हमें Discipline व Tightness की ज़रूरत है, तो छेदोपस्थापनीय विधि अपनाई जाती है। इसमें कोई भी गलती होने पर Punishment मिलती है। ऐसा करके पुरानी बुराइयों को साफ किया जाता है।'

'अगर वे बुराइयाँ बहुत ज़्यादा हों तो परिहार विशुद्धि की विधि है। इसमें 9 साधक मिलकर तप व सेवा में लग जाते हैं।'

'इस तरह साधना करते-करते बड़ी-बड़ी बुराईयाँ खत्म हो जाती हैं। जब मामूली सी बुराई बाकी रह जाती है, तो वह Condition सूक्ष्म संपराय (संपराय= बुराई) की कहलाती है। जब वो बुराई भी खत्म हो जाए, तो ज़िंदगी पूर्णतः शुद्ध यथाख्यात बन जाती है। इससे आत्मा Crystal Clear बन जाती है।'

बिट्टू– 'Sir, जब गंगा मैय्या की सफाई की बात आई, तभी मुझे गुरुजी की बात याद आ गई और मैंने सारा Project उसके Base पर तैयार कर लिया।' यह सब सुनकर Russia का P.M. बोला– 'Your Country is Great. Your Guruji is Great. Ganga Maiya is Great!'

□□□

★★★★★ 25वां बोल – चारित्र पाँच ★★★★★

प्रार्थना

प्यारे-प्यारे पच्चीस बोल,
बोल बड़े हैं ये अनमोल।
आओ इनका ज्ञान करें,
जीवन का निर्माण करें।
धरती की रक्षा में हम,
आगे बढ़ाएँ अपने कदम।
बने दयालु और सच्चे,
कहलाएँ अच्छे बच्चे।
हम सब का हो ये अभियान,
सबका मंगल और कल्याण ॥

Tune: Twinkle-Twinkle Little Star...

'जैन संस्कार शिविर' के आयोजन का लक्ष्य बच्चों को theory के साथ practical धर्म से जोड़ना रहा है और इसी प्रयास का परिणाम है यह पुस्तक–

'25 बोल – With a *Twist*'

यह Jainism की ऐसी introductory book है जो interesting और knowledgable है।

ऐसा पूर्ण विश्वास है कि बच्चों की एक सहज माँग 'Fun के साथ अध्ययन' इस पुस्तक से पूरी होगी। इसके अतिरिक्त कोई भी नया व्यक्ति जो Jainism को साधारण भाषा में जानने का इच्छुक है, उसे भी यह पुस्तक recommend की जा सकती है।

देव-गुरु-धर्म की कृपा से जिनशासन की बगिया में ऐसे पुष्प खिलते रहें, इसी शुभाशंसा के साथ...

रविन्द्र जैन
जय जिनशासन प्रकाशन

बच्चे मन के सच्चे,
ये बातें हुई पुरानी।
ये वो तीखी मिर्ची हैं,
जो याद करा दें नानी।
पर हम सबने भी है,
कुछ मन में ऐसी ठानी।
मन में इनके गुंजित करनी,
वीर प्रभु की वाणी॥